शुभ सूचना

हमारे राष्ट्र के लिए अति सम्माननीय एवं गर्व की बात है कि
युनेस्को द्वारा हमारे राष्ट्रीय गान को विश्व का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय गान घोषित किया गया है.

राष्ट्रगान का अर्थ

जन	– जनता	हिमाचल	– हिमालय	जय	– जीत
गण	– समूह	यमुना	– यमुना	गाथा	– ध्वनि
मन	– दिमाग	गंगा	– गंगा	जन	– जनता
अधिनायक	– नेता	उच्छल	– बहती	गण	– समूह
जय हे	– जीत	जलधि	– जलाशय	मंगल	– शुभ
भारत	– हिन्दुस्तान	तरंग	– लहरें	दायक	– दाता
भाग्य	– किस्मत	तव	– तुम्हारा	जय हे	– जीत
विधाता	– भगवान	शुभ	– उत्तम	भारत	– हिन्दुस्तान
पंजाब	– पंजाब	नामे	– नाम	भाग्य	– किस्मत
सिंधु	– सिंधु	जागे	– जागृति	विधाता	– भगवान
गुजरात	– गुजरात	तव	– तुम्हारा	जय हे जय हे जय हे	
मराठा	– मराठी महाराष्ट्र	शुभ	– उत्तम	जय जय जय जय हे–	
द्राविड़	– दक्षिण	आशीष	– आशीर्वाद		
उत्कल	– उड़ीसा	मांगे	– मांगना	जीत जीत जीत	
बंग	– बंगाल	गाहे	– गान	सर्वदा जीत।	
विंध्य	– विंध्य	तव	– तुम्हारा		

पत्रिका पंजीयन क्र./2001/6505 दिनांक 29/04/2002 पोस्ट पंजीयन क्र. 536

पोस्ट दिनांक 5 जून 2017

प्रेषक :
माहेश्वरी महिला
माहेश्वरी सदन, जयेन्द्रगंज
ग्वालियर (म.प्र.)

प्रति,

माहेश्वरी महिला समिति की ओर से चन्द्रा स्टेशनरी एण्ड प्रिंटिग वर्क्स से मुद्रित, श्रीमती मनोरमा लड्डा द्वारा ग्वालियर से प्रकाशित एवं संपादित

जुलाई 2017 मूल्य : दस रूपए

वर्ष : 17, अंक : 6

माहेश्वरी महिला

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी संगठन का मासिक मुखपत्र

"शिव की नगरी में शुभ संकल्प के साथ शुरू हुआ सत्र एकादश"

महाकालेश्वर के शिवशक्ति स्वरूप को शत्-शत् नमन

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की
कार्यसमिति की बैठक के उद्घाटन समारोह की झलकियाँ

माँ शिप्रा की स्तुति में स्वरचित
आंचलिक गायन प्रतियोगिता

माँ क्षिप्रा

(प्रथम स्थान प्राप्त भजन)

जय जय भवतारिणी मां क्षिप्रा, तेरी महिमा का गुणगान करें–2
जो सच्चे मन से ध्यान धरे, वो भवसागर से पार करे – 1

1. ये कलकल छलछल बहता जल,
   है शुद्ध सरल पावन निर्मल – 2
   मानवता का उद्धार करे, जन जीवन हो जाए उज्ज्वल – 2

2. तू साक्षी है प्रभु राम की तट पे, पिता का श्राद्ध किया
   तेरे आंचल की छाया में कृष्ण, सुदामा ने ज्ञान था पाया

   ओ मईया, गुरु से ज्ञान था पाया
   जय जय.............(1) आ................(2)

3. तेरे तट पे विराजे महाकाल, दर्शन कर हम होते निहाल – 2
   यहीं रामघाट, नृसिंह घाट, गंधर्व तीर्थ भी है महान – 2

4. महाकुंभ के मेले में, नर–नारी लाखों आये,
   मां मोक्ष दायिनी के प्रताप से, मुक्ति को पा जाये
   हां, जनम मरण से मुक्ति पाये
   आ....................

5. तेरी महिमा जाने है जन–जन, फिर भी तुझे दूषित कर देते
   हो सदुपयोग तेरा हम तो, सब से यही विनती हैं करते
   इतिहास तेरा मां अमर रहे, जयकार तेरी हम गाते हैं – 2

   जय................. – 1
   तेरी महिमा..........– 3

पूर्वांचल माहेश्वरी महिला संगठन

माहेश्वरी महिला

अखिल भारतीवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन का मुखपत्र

प्रकाशक

माहेश्वरी महिला समिति

263, जीवाजी नगर, थाटीपुर, ग्वालियर
फोन : 0751-2340068, मो.: 9329606094
फैक्स : 0751-2232402
ई-मेल : maheshwarimahilagwl@gmail.com

अध्यक्ष
श्रीमती मनोरमा लड्ढा

उपाध्यक्ष
श्रीमती विमला देवी साबू

सचिव
श्रीमती लता लाहोटी

कोषाध्यक्ष
श्रीमती अनीता माहेश्वरी

संयुक्त सचिव
श्रीमती शोभा सादानी

सदस्य
श्रीमती पद्मा देवी मूंदड़ा
श्रीमती गीता देवी मूंदड़ा
श्रीमती रतनी देवी काबरा
श्रीमती कल्पना गगरानी
डॉ. श्रीमती ताता माहेश्वरी
श्रीमती निर्मला जेठा

संपादक मंडल
संपादक
श्रीमती मनोरमा लड्ढा

श्रीमती सुशीला काबरा

श्रीमती रेखा माहेश्वरी

सम्पादकीय

मनोरमा लड्ढा
सम्पादक

राष्ट्रीय महिला संगठन के एकादश सत्र के शुभ संकल्प का आगाज हुआ, अवंतिकापुरी में। जो कृष्ण-सुदामा की ज्ञान स्थली, पुण्य सलीला क्षिप्रा की सतत् प्रवाह स्थली है, तो महाराजा विक्रमादित्य जी की न्यायप्रिय नगरी और देवों के देव महादेव महाकालेश्वर की पवित्र भक्ति नगरी है। जैसी कि मान्यता है और यह वैज्ञानिक सत्य भी है कि हमारे तन-मन और मस्तिष्क पर वातावरण का बहुत प्रभाव पड़ता है। इस सत्यता का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ भक्ति, शक्ति और ज्ञान की नगरी में, जब राष्ट्रीय संगठन की महिलाओं ने संस्कार, संस्कृति और सभ्यता का संगम बन महाकालेश्वर के सामूहिक रुप से दर्शन किये, उनका आशीर्वाद प्राप्त किया और मन्दिर प्रांगण में ही कुण्ड के ऊपर भगवान भास्कर की साक्षी में मंगलाचरण की मंगल ध्वनि के मध्य, मंगल सुसज्जित माटी के कलश से सूर्य की अराधना के साथ नि:स्वार्थ भाव से समाज कार्य करने का एवं समाज में ''सब का साथ सब का विकास'' करने का संकल्प लिया। सभी पदाधिकारियों ने विक्रमादित्य की न्यायप्रियता, कृष्ण-सुदामा के मैत्रीभाव को स्मरण कर समाज में समरसता का भाव लाने की प्रेरणा धारण की तो कल्याणकारी, औघड़दानी महाकाल महादेव के परोपकारी गुणों को जीवन में उतारने की सीख ली। पुण्यदायिनी, पापहारिणी क्षिप्रा बिना रुके, बिना थके, सतत् प्रवाहित हो अपने स्वच्छ-पवित्र जल से जनमानस को पापों से तारती है, इससे महिलाओ को 'परोपकाराय इदम शरीरम' की शिक्षा मिली व समाज हित में नि:स्वार्थ भाव से कार्य करने की प्रेरणा मिली। इस प्रेरणा की परिणिति उद्घाटन सत्र में देखने को मिला जब नए लक्ष्य, नया जोश, नए आयाम और नई ऊँचाइयों का प्रत्यक्ष प्रस्तुतिकरण नए सत्र की नई समितियों के द्वारा समाजोत्थान व परोपकारी कार्यों की कई योजनाओं के साथ प्रस्तुत किया गया।

हमारी शास्त्रीय मान्यता के अनुसार 'संकल्प' शब्द का बहुत महत्व होता है। किसी भी शुभ कार्य, अनुष्ठान, पूजन आदि के प्रारम्भ में कार्य सिद्धि के लिए 'संकल्प' लिया जाता है। बहनों, हमने भी नए एकादश सत्र में समाज के सर्वांगीण विकास का, एकता का, समरसता का, संस्कार और संस्कृति के संवर्धन का, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का, युवा पीढ़ी को संस्कारित करने का, समाज के संवर्धन का, पारिवारिक सामंजस्य बनाये रखने का संकल्प लिया है। हमें निजी स्वार्थ, पद, प्रतिष्ठा के अहम् को छोड़ ''परहित सम धर्म नहीं भाई'' की भावना के साथ कार्य करना है क्योंकि समाज ने आपको पदासीन कर कर्तव्य के बंधन में बांधा है, आपमें विश्वास दिखाया, आपको सामाजिक उत्थान की जिम्मदारी दी और कहते हैं जैसे फल से लदा वृक्ष सदैव झुका रहता है वैसे ही

नम्रता के साथ सब को साथ लेकर चलना है, अपनी मिठास से सब को तृप्त करना है। अपने समाज में जो सम्पन्न हैं, शिक्षित हैं, स्वस्थ हैं, वे समाज के अन्य जरुरतमंद भाई-बहनों का सहयोग करें, समाज की योजनाओं को घर-घर, हर घर तक पहुंचायें (समाज के ट्रस्टों की जानकारी देकर) यह कर्तव्य सभी पदाधिकारियों का, सेवाभावी बहनों का होना चाहिए।

हम भगवान महेश की संतान हैं, भगवान महेश के परिवार के सभी सदस्य विपरीत स्वभाव वाले हैं किन्तु कल्याणकारी भगवान महेश के शुभ संकल्प एवं उनके सानिध्य में सभी साथ-साथ प्रेम पूर्वक रहते हैं। आज के आधुनिक परिवेश में पारिवारिक जीवन और दाम्पत्य जीवन दोनों ही लड़खड़ा रहे हैं, छोटे-छोटे स्वार्थ और अहंकार से परिवार की एकता में टूटन आ रही है, इसे रोकना होगा, भगवान महेश की ऊर्जा को जीवन में उतारना होगा, क्योंकि -

पक्षी आकाश में कितना ही ऊँचा उड़ ले,
दाना चुगने तो उसे जमीन पर ही आना होगा।

हम अपने धरातल, अपने संस्कार, संस्कृति को सदैव स्मरण रखते हुए भगवान महेश के कल्याणकारी स्वभाव को जीवन में उतारना है। यही महेश नवमी पर शुभ संकल्प लेना है।

महेश नवमी की हार्दिक शुभकामनाएं।

श्रीमती मनोरमा लड्ढा
संपादक

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा ब्रजधाम यात्रा का आयोजन

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा दिनांक 14.08.2017 से 21.08.2017 तक ब्रजधाम यात्रा का आयोजन किया गया है, जिसकी विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है:-

सुदर्शन ब्रज यात्रा

स्थानीय निवास-हरेकृष्णा आर्किड, वृंदावन
शुल्क-21000/- रु. प्रति व्यक्ति, जिसमें निवास,, भोजन, कार द्वारा यात्रा सम्मिलित है। यात्रा एवं निवास की सभी सुविधाएं इसी में रहेंगी।

और अधिक जानकारी के लिए
श्रीमती शर्मिला राठी
09837888088
से सम्पर्क करें

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन

अध्यक्ष
श्रीमती कल्पना गगरानी
मुम्बई
*
महामंत्री
श्रीमती आशा माहेश्वरी
कोटा
*
अर्थमंत्री
श्रीमती कौशल्या गट्टानी
उदयपुर
*
संगठन मंत्री
श्रीमती मंजू बांगड़
कानपुर
*
निवर्तमान अध्यक्ष
श्रीमती सुशीला काबरा, इन्दौर
उपाध्यक्ष
श्रीमती सरला काबरा, गोवाहाटी
श्रीमती ममता मोदानी, भीलवाड़ा
श्रीमती ज्योति राठी, रायपुर
श्रीमती कान्ता गगरानी, आगरा
श्रीमती शैला कलंत्री, येवला
*
सहसचिव
श्रीमती मंजू कोठारी, कोलकाता
श्रीमती फूलकुंवर मूंदड़ा, जोधपुर
श्रीमती मंगल मर्दा, वापी
श्रीमती शर्मिला राठी, दिल्ली
श्रीमती प्रकाश मूंदड़ा, बैंगलौर
*
कार्यालयीन सचिव
श्रीमती सुषमा मूंदड़ा, ठाणे
संचालक मंडल
संरक्षिका
श्रीमती लता लाहोटी, पुणे
अध्यक्ष
श्रीमती आशा लड्ढा, फरीदाबाद
उपाध्यक्ष
श्रीमती पुष्पलता परतानी, अमरावती
सदस्य
श्रीमती राजकुमारी कोठारी, औरंगाबाद
श्रीमती विनीता लाहोटी, कोटा
श्रीमती वीणा राठी, ग्वालियर

अध्यक्षीय

सत्रारंभ हो चुका है। हमारी 'कार्ययोजना' हम प्रस्तुत कर चुके हैं। योजनानुरुप समितियों का गठन भी हो चुका है। गठन का आधार योजनानुसार सदस्य के सोच एवं कार्यक्षमता को बनाया गया। अखिल भारतीय सभी माहेश्वरी बहनों के लिए सुनहरा अवसर था। अनेकों बहनों ने समस्त ग्यारह समितियों से अपनी रुचि अनुसार समिति के कार्यों, उद्देश्यों की योजना हजार शब्दों में लिख कर भेजी। उनमें से 77 बहनों का चयन किया गया। हर समिति का एक समिति प्रभारी एवं छह संयोजक नियुक्त किये गये। प्रभारियों ने संयोजकों के साथ संपूर्ण सत्र की योजना को क्रियान्वित करने के तरीकों को बनाया। प्रभारियों की एक बैठक दिल्ली में आयोजित की गई। विस्तार पूर्वक चर्चा हुई, बड़े ही जोश पूर्वक उन्होंने कार्यारंभ भी कर दिया। फेसबुक पेज, वेबसाइट निर्माण ने गति पकड़ी और पूरी तैयारी से पहुंचे हम सब उज्जैन महाकाल के मंदिर में, भगवान शंकर के दर्शन कर, ज्योतिर्लिंग के कुंड में सूर्य देवता को साक्षी मान संपूर्ण सत्र तन-मन-धन, समय एवं बुद्धि संग कार्य करने का 'संकल्प' लिया।

योजनाएं तो बड़ी सुंदर बन गईं, इन्हें पूर्ण करने की जवाबदारी प्रदेशों की होती है अत: आवश्यक था अपने कार्यों के क्रियान्वयन का तरीका प्रदेश प्रभारियों को समझाना। समितियों ने बहुत सुंदर एवं प्रभावी पी.पी.टी. प्रेजेन्टेशन से पहले ये बात सदन के सम्मुख रखी एवं दूसरे दिन गाजे-बाजे, परिधान, जिंगल के साथ अभिनय संग सदन को अपने कार्यों की महत्ता एवं क्रियात्मकता दर्शाई।

पहला ओवर पूरा हुआ। आरंभिक बल्लेवाजों ने जम कर पारी की शुरूआत कर दी है, अब बारी है प्रदेशों की, उनकी भी शक्ति प्रदर्शन योजना बड़े उत्साह से बन रही है। आप सबका साथ ही हमारा संबल। मिल-जुल कर समाज सेवा के पथ पर आगे बढ़ेंगे - तथास्तु।

अध्यक्ष

प्रो. कल्पना गगरानी

आत्मचिंतन का पर्व है 'महेश नवमी'

3 जून 2017 शनिवार, ज्येष्ठ शुक्ल नवमी को हमारा वंशोत्पत्ति दिवस महेश नवमी है, सभी माहेश्वरी भाई-बहनों, बच्चों को इस शुभ दिवस पर हार्दिक बधाई।

इस आत्मचिंतन, पारिवारिक चिंतन, सामाजिक चिंतन पर सभी को शुभकामनाएं।

हमें चिंतन करना है कल हम कहां थे, आज कहां हैं, कल कहां जाना है.........?

आज का दौर परिवर्तन का दौर है। रहन-सहन, खान-पान, पहनावे के साथ सामाजिक जीवन की सोच बड़ी तेजी से न केवल हमारे समाज बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के साथ विश्व मंच पर बदल रहा है, जिससे कोई भी अछूता नहीं है। नई वैज्ञानिक खोजों ने, संचार क्रांति के विकास और विनाश, उत्थान और पतन, दोनों ही मानव जीवन को दिये हैं। इनका चयन, प्रयोग, अनुकरण व अनुसरण हमारे संस्कारों एवं सोच पर निर्भर है। सामाजिक मंचों पर अहम का टकराव आज बड़ी समस्या बनकर हमारे बीच आया है। परिवार हो या समाज या संस्थाएं जहां हमारी जीवन शैली में आई सोच एवं विकारों से दुखी हैं, वहीं संगठनात्मक दृष्टिकोण से समाज इस 'अहम्' से एवं परिवार व्यक्तिगत रिश्तों में निरंतर विकलांगता की ओर बढ़ रहा है। इस 'चिंतन पर्व' पर हमें विशेष रुप से इसका चिंतन करना चाहिए, माहेश्वरी समाज की सामाजिकता, आर्थिक, बौद्धिक संगठनात्मक जीवन शैली पर कई समाज संगठन चिंतन कर अपनाने का प्रयास कर रहे हैं और करना भी चाहिए, क्योंकि उपलब्धियां प्राप्त का यही सर्वोत्तम मार्ग है। अत: हमारे न केवल व्यक्ति, पारिवारिक एवं सामाजिक धर्म पर बल्कि उससे बढ़कर हमारे राष्ट्रीय धर्म पर चिंतन करना होगा, तभी हम अपनी आज की भूमिका में भगवान उमा महेश के आशीर्वाद के साथ न्याय कर पायेंगे, अन्यथा यह हमारे सेवा, त्याग, सदाचार का संदेश देने वाले भगवान महेश के साथ वादाखिलाफी होगी और आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी।

महेश नवमी के पावन पर्व पर हमें संकल्प लेना होगा कि परिवर्तन की आंधी चाहे कितनी भी तेज क्यों न हो, हम हमारे समाज के आदर्श, उसकी विचारधारा एवं संस्कारों को किसी भी तरह से क्षति नहीं पहुंचने देंगे एवं बोध चिन्ह को समाज के साथ-साथ देश के लिए भी प्रेरणादायी बनायेंगे।

अत: काम जो करने हैं...................

1- 'अगले जनम मोहे बिटिया ही कीजो' निबंध स्पर्धा या लघु नाटिका आयोजित करवायें। महिलाओं के लिए कानून के तहत वसीयत बनना आवश्यक है, इसके तहत परिवार को शौर्य पुरस्कार द्वारा सम्मानित करवायें।

2- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ भाग्यश्री योजना पर कार्य करना है।

3- सरकार की योजना के तहत प्रथम सन्तान जन्म पर योजना का समाज को भी लाभ उठाना चाहिए।

4- सर्वोत्तम दान रक्तदान - हमारे रक्त से किसी को जीवनदान मिले तो इससे बड़ा दान और पुण्य क्या हो सकता है? रक्तदान से दुनिया को मानवता का मंदिर बनायें एवं राष्ट्रीय महिला संगठन को रिपोर्ट करें, कितना यूनिट रक्त आपने एकत्र किया है।

जय महेश

सौ. कल्पना गगरानी, राष्ट्रीय अध्यक्ष

सौ. आशा माहेश्वरी, राष्ट्रीय महामंत्री

अखिल भारतवर्षीय महिला संगठन के एकादश सत्र की प्रथम कार्यसमिति बैठक 'संकल्प' सम्पन्न

अखिल भारतवर्षीय मा.म.सं. के एकादश सत्र की प्रथम कार्यसमिति बैठक ''संकल्प'' 8-9 अप्रैल 2017 को पुण्यसलिला क्षिप्रा नदी के तट पर बसी महाकाल ज्योतिर्लिंग की नगरी उज्जैन (म.प्र.) में संपन्न हुई। यह आयोजन पश्चिमी मध्यप्रदेश मा.म.सं. द्वारा उज्जैन जिला माहेश्वरी म.सं. के आतिथ्य में किया गया, जिसमें सभी राष्ट्रीय पदाधिकारी पूर्व अध्यक्षाएं, रा. कार्यसमिति सदस्य, एकादश समितियों के राष्ट्रीय प्रभारी, समिति संयोजक, प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश मंत्री, स्थायी प्रकल्पों के सदस्य सहित लगभग 250 बहनों ने भाग लिया।

पदाधिकारियों की बैठक: दिनांक 7 अप्रैल 2017 को मध्यान्ह में सभी पदाधिकारियों की एक बैठक हुई जिसमें आगामी दो दिनों में होने वाली बैठक की संरचना की गई। विभिन्न प्रदेशों से आये पत्रों व सूचनाओं पर विचार मंथन किया गया एवं आगामी कार्यक्रमों की चर्चा की गई। पूर्व अध्यक्षों द्वारा वर्तमान पदाधिकारियों का कॉलर बैच लगाकर अभिनन्दन किया। महासभा में महिला संगठन की अध्यक्ष कल्पना जी द्वारा रखी गई कार्ययोजना की सभी ने सराहना की।

चर्चा बिंदु: राष्ट्रीय कार्यसमिति व प्रदेश अध्यक्ष के कार्य बांटे जाएं तो सभी की बराबर जवाबदारी रहे, समिति प्रभारी प्रमुख का पद बनाया जाए। पूर्व अध्यक्ष शोभाजी सादानी को यह पद दिया गया। 'सुकृत्या' पुस्तक में संगठन के जिले एवं प्रदेशों की जानकारी दी गई है। राष्ट्रीय कार्यालय सचिव सुषमाजी मूंदड़ा की 'संचारिका' पत्रिका का सुनियोजित ढंग से कार्य करने हेतु सभी ने सराहना की। ग्रुपों पर चर्चा हुई, वेबसाइट लिंक पेज, फेसबुक, गूगल सर्च, पेपरलेस वर्क पर चर्चा, मिनट्स की एक कॉपी सभी के पास भेजा जाना चाहिये पर चर्चा की गई। पूर्व अध्यक्ष गीताजी मूंदड़ा ने कहा यह टेक्नोलॉजी फ्रेंडली काल है इसलिए सभी डेटा कम्प्यूटर से सेव करके रखें। राष्ट्रीय का सीधा संपर्क राष्ट्रीय संगठन मंत्री से रहे एवं उनके कार्यों पर संगठन मंत्री का सुपरविजन रहे।

मस्ती की पाठशाला: रात्रि में सभी सदस्यों व पदाधिकारियों ने एक दूसरे से परिचय किया एवं रुचियां जानी। मस्ती भरे नृत्य-गीतों के माहौल में पारम्परिक झाले-वारणे का सभी ने आनन्द लिया।

8 अप्रैल 2017 प्रथम सत्र - कार्यसमिति बैठक: महाकालेश्वर मंदिर के समीप भक्त निवास में कलात्मकता

पदाधिकारियों की बैठक को मार्गदर्शन देते हुए अध्यक्ष कल्पना गगरानी

से सजे हॉल में आयोजक संस्था द्वारा सभी पदाधिकारियों एवं अतिथियों का, देश के कोने-कोने से पधारी बहनों का आत्मीयता से भावभीना स्वागत किया गया। पश्चिमी मध्यप्रदेश अध्यक्ष अरूणा बाहेती, स्वागत मंत्री उषा सोढ़ानी, स्वागत अध्यक्ष सरस्वती सारडा द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया गया।

दीप प्रज्वलन एवं महेश वंदना द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। बीते समय में जो साथी परलोक गमन कर गये उन्हें सदन द्वारा मौन रहकर श्रद्धांजलि दी गई।

संगठन की संरक्षिका मां रत्नीदेवीजी काबरा के आशीर्वचनों का वाचन महामंत्री आशाजी माहेश्वरी द्वारा किया गया साथ ही आपने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि संगठन के सभी सदस्य अपने दायित्वों को समझकर संपर्क

संरक्षिका मां रत्नीदेवी काबरा का संदेश पढ़ते हुए महामंत्री आशा माहेश्वरी

बनाकर कार्य करते रहें, उत्साहित एवं समर्पित रहें। संगठन का कार्य समिति आधारित होता है। इंसान अपने पद से नहीं कार्यों से बड़ा होता है, कद से बड़े पद नहीं हैं अत: अपने कार्यों से पहचान बनायें। राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. कल्पनाजी गगरानी ने अपने उद्बोधन में कहा कि छोटी-छोटी बातों को तूल न दें और लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़ते जायें। महिला के कारण कोई पद गौरवान्वित हुआ है न कि पद के कारण महिला ऐसा मानते हुए कार्य करें, क्या हुआ, किसने किया इन प्रपंचों में न पड़ें, जो जिसका हकदार है उसे वह दें, उदार बड़े मन वाले बनें, सभी को मान सम्मान दें, जितने हाथ जुड़ेंगे उतने बड़े काम होंगे अत: सबको साथ लेकर इज्जत देकर अपने लिए राहें आसान बनायें। अध्यक्ष द्वारा 5 कार्यसमिति सदस्यों को विधान अनुसार मनोनीत किया गया।

11वें सत्र में कार्यों को विस्तार देने हेतु, सुव्यवस्थित रूप से कार्य करने हेतु 11 समितियों का ''स'' से नामकरण कर गठन किया गया। हर समिति में एक राष्ट्रीय प्रभारी एवं 6 संयोजक बनाये गये। सभी का परिचय करवा कर बैज लगाकर सम्मान किया। हर समिति ने अब तक किये गये कार्य वृतान्त एवं क्या-क्या कार्य किये जा सकते हैं का विवरण दिया जो बहुत ही सराहनीय रहा और इससे संबंधित पोस्टर भी प्रदर्शित किये। सभी पदाधिकारियों एवं पूर्व अध्यक्षाओं ने कार्ययोजनाओं की तारीफ की एवं शुभकामनाएं दी।

अध्यक्ष एवं महामंत्री ने सभी को आधुनिक टेक्नोलॉजी से स्वयं को जोड़ कर पेपरलेस वर्क करने पर जोर दिया, सभी कम्प्यूटर एवं मोबाइल फ्रेंडली बन कर स्वयं को चार्ज रखें संगठन की वेबसाइट भी इस अवसर पर लाँच की गई जिस पर संगठन के कार्यो-योजनाओं को देखा जा सकता है - व्हाट्सएप पर विभिन्न ग्रुप बना कर सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जा रहा है। सभी वेबसाइट विजिट करें यह भविष्य में इन्कम का सोर्स भी बन सकता है।

द्वितीय सत्र - संध्या समय मोक्षदायिनी पुण्यसलिला मां क्षिप्रा नदी के दत्ता घाट पर चुनरी के परिधान में सजी संवरी बहनों द्वारा आरती करके क्षिप्रा नदी को चुनरी ओढ़ाई गई। नदियों की सेहत सुधरी रहे व जल संरक्षण का संदेश देने वाले पोस्टर्स जल ही अमृत है का प्रदर्शन किया गया।

स्वरचित भजनों की प्रतियोगिता: क्षिप्रा नदी की महिमा, आस्था को उल्लेखित करने वाले स्वरचित भजनों की प्रतियोगिता रखी गई। सभी अंचलों से एक-एक प्रस्तुति

रखी गई, जिसकी सभी ने मुक्त कण्ठ से सराहना की, प्रतियोगिता में विजेता रहे प्रथम पूर्वांचल, द्वितीय दक्षिणांचल, तृतीय मध्यांचल, सांत्वना - पश्चिमांचल, उत्तरांचल।

क्षिप्रा को सम्बोधित करते हुए पारस जी जैन (कैबिनेट मंत्री)

इस कार्यक्रम के अतिथि शैलेन्द्रजी पाराशर (उपकुलपति अंबेडकर यूनिवर्सिटी) पारसजी जैन (ऊर्जा मंत्री) एवं रोहितजी सोमानी (उद्योगपति) ने कार्यक्रम की सराहना की।

मध्यप्रदेश जिला संगठन द्वारा - पितृपक्ष में 15 दिनों तक किये जाने वाले सांझा पूजन एवं मालवा की लोक संस्कृति का वर्णन नृत्य के माध्यम से बहुत सुरूचि पूर्ण ढंग से किया गया, बहुत ही शानदार एवं जानदार प्रस्तुति कलाकारों द्वारा दी गई।

रात्रि सत्र - सभी प्रदेश अध्यक्षों द्वारा प्रदेश में हुए कार्यक्रमों की रिपोर्ट का वाचन किया गया, जिसकी विवेचना अध्यक्ष एवं महामंत्री द्वारा की गई।

9 अप्रैल शोभा यात्रा एवं उद्घाटन सत्र: महाकाल मंदिर के दर्शन कर, कुण्ड के जल से सूर्य को अर्घ्य देकर, संकल्प लेकर भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जगह-जगह पुष्पवर्षा से स्वागत किया गया, सभी विशिष्ट, मुख्य, प्रमुख, विशेष, प्रधान अतिथियों को जयघोष एवं पुष्पवर्षा के साथ कार्यक्रम स्थल तक लाया गया। शिव स्तुति गान, शिव स्त्रोत का अति सुंदर नृत्यमय प्रदर्शन कलाकारों द्वारा किया गया। बेटी बचाओ पर एक नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत की गई। संचारिका समिति द्वारा बनाये गये संगठन के प्रोमो का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटक म.प्र. सरकार के केबिनेट मंत्री श्री पारसजी जैन ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ बनाने में योगदान देने वाली, सबसे ज्यादा टैक्स देने वाली जाति माहेश्वरी एवं जैन ही है। विशेष अतिथि भूतपूर्व विधायक श्री शिवाजी कोटवानी ने कहा कि - महिलाओं की संकल्प शक्ति अद्वितीय है यहां से संकल्प लेकर उठी है तो विश्व प्रसिद्ध तो होना ही है। जुल्म को रोकने के लिए स्वयं को ही उठना होगा, चिन्तन मनन करना होगा। विशेष अतिथि - विक्रम यूनि. के भूतपूर्व उपकुलपति श्रीराम राजेश मिश्र ने कल्पनाजी की स्टूडेन्ट लाइफ की यादें साझा की, आप बेस्ट स्टूडेन्ट एवं यूनिवर्सिटी प्रेसीडेन्ट रहीं। साथ ही आपने बताया कि नदी के पथ का सदाचार बना रहे इसके लिए सहायक नदियों की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। मुख्य अतिथि रामअवतारजी जाजू (समाजसेवी व उद्योगपति) अस्वस्थ होते हुए भी शुभकामना देने कार्यक्रम में पधारे व शुभकामना दी। सभी अतिथियों ने अध्यक्ष कल्पनाजी को भारी फूलों का हार पहना कर एक तलवार भेंट की।

मुख्य अतिथि –

महासभा के सभापति श्री श्यामजी सोनी ने महिला संगठन के सभी प्रेजेन्टेशन्स की सराहना की। आपने कहा कि प्रोफेशनल बन कर धन कमाने की जगह धन का विनियोजन किस तरह हो इस पर ध्यान देना है। टारगेट बनाया है कि सभी का इकोनोमिक डाटा एकत्र किया जाए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, महासभा के अध्यक्ष सभा को संबोधित करते हुए

एक दिन पूर्व महासभा की इन्दौर में सम्पन्न हुई मीटिंग में 21 करोड़ रूपये के 4 ट्रस्ट बनाये। रतनीदेवीजी काबरा के नाम का ट्रस्ट सिर्फ महिलाओं के एम्पावरमेन्ट के लिये है। केवल आर्थिक सहयोग के बजाय केस स्टडी करो और किसी को रोजगार में लाओ जैसे टेली रोजगार आदि। संचारिका, सुकृत्या एवं सुरम्या समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन किया गया। समितियों का बैनर प्रेजेन्टेशन –सभी समितियों की प्रमुख एवं पूर्व अध्यक्ष शोभाजी सादानी के मार्गदर्शन एवं देखरेख में सभी समितियों का संगीतमय बैनर प्रेजेन्टेशन हुआ, जिसमें सोनाली एवं उर्मिला कलंत्री का योगदान भी सराहनीय रहा। हर समिति का स्वयं का चुना हुआ गाना बजाया गया। सदन एवं अतिथियों ने इसकी सराहना की।

'संकल्प' कार्यसमिति बैठक के सभी कार्यक्रम – सुलेखा, सुकीर्ति, सुषमा, सुरभि, सुचिता समितियों के अंतर्गत रखे गये थे।

निबंध प्रतियोगिता 'महिलाओं की शिक्षा का स्वरुप कैसा हो' विषय पर हुई निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिये गये – प्रथम रमा भूतड़ा आन्ध्रप्रदेश, द्वितीय रमा साबू मध्यप्रदेश, तृतीय प्रेम मानधना पश्चिमी राजस्थान, सांत्वना सुनीता बिहानी उत्तरी राजस्थान, ममता भट्टड़ पूर्व मध्यप्रदेश, कृष्णा कोठारी वाराणसी, सुषमा चांडक मुंबई, श्रीमती अनामिका नेपाल।

इस दो दिवसीय कार्यक्रमों में पूर्व अध्यक्ष गीताजी मूंदड़ा एवं निवर्तमान अध्यक्ष सुशीलाजी काबरा के मार्गदर्शन में सभी कार्यक्रम सुचारू रूप से संपन्न हुए। माहेश्वरी टाइम्स के संपादक पुष्करजी बाहेती का भी विशेष सहयोग रहा।

देश के कोने– कोने से उज्जैन पहुंचने वाली बहनों को रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट से रिसिव करके भक्त निवास (आवास स्थल) तक पहुंचाकर कमरे में व्यवस्थित करना, चाय, अल्पाहार, भोजन, दूध, महाकाल के दर्शन की सभी व्यवस्थाओं में उज्जैन की बहनें धैर्य, शांति व तत्परता के साथ हंसमुख चेहरा लिये प्रतिपल साथ रहीं, उनका यह सानिध्य व सहयोग अविस्मरणीय है। राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पनाजी के द्वारा उज्जैन की सभी कार्यकर्ता बहनों का सम्मान किया गया।

उज्जैन की कार्यकर्ता बहनों का सम्मान करते हुए
अध्यक्ष कल्पना जी, साथ में अध्यक्ष मनोरमा लड्ढा

श्रीमती आशा माहेश्वरी, कोटा
महामंत्री, अ.भा.माहे.महिला संगठन

माँ शिप्रा का चुनरी उत्सव एवं आरती

राष्ट्रीय संगठन द्वारा आयोजित बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ प्रतियोगिता की आकर्षक प्रस्तुतियाँ

दर्शिका गैलरी में कार्यक्रम का आनंद लेते हुए समाज बन्धु

महिला संगठन ने लिया 'जल बचाओ' का संकल्प

राष्ट्रीय महिला संगठन के स्थाई प्रकल्प

माहेश्वरी महिला समिति

महिला सेवा ट्रस्ट

एम.एन.यू. ब्रांड

माहेश्वरी महिला संगठन के एकादश सत्र में गठित एकादश समितियों के कार्ययोजनाओं की सुन्दर प्रस्तुति

सुलेखा समिति

सुश्रीता समिति

सुरभि समिति

संचारिका समिति

सुरम्या समिति

सौष्ठा समिति

सुषमा समिति

सुकीर्ति समिति

सुगन्धा समिति

सुचिता समिति

सवर्णा समिति

राष्ट्रीय सुलेखा समिति - मंथन के मोती

राष्ट्रीय सुलेखा समिति के अन्तर्गत प्रथम राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता **''महिलाओं की शिक्षा का स्वरूप कैसा हो''** विषय पर आयोजित की गई, जिसमें 27 प्रदेशों से तीन-तीन प्रस्तुतियां प्राप्त हुई। कुल मिलाकर 81 निबंध आये। सभी प्रांतों में बहनों में काफी उत्साह दृष्टिगोचर हुआ। राष्ट्रीय सुलेखा समिति इस सहयोग के लिए सभी का आभार प्रकट करती है। इस प्रतियोगिता के परिणाम निम्नलिखित हैं।

1- **प्रथम स्थान:** श्रीमती रमा भूतड़ा, आंध्र प्रदेश

2- **द्वितीय स्थान:** श्रीमती रमा साबू, मध्यप्रदेश

3- **तृतीय स्थान:** श्रीमती प्रेमलता मानधना, पश्चिमी राजस्थान

सांत्वना पुरस्कार

1- श्रीमती सुनीता बिहानी, उत्तरी राजस्थान

2- श्रीमती ममता भट्टर, पूर्वी मध्यप्रदेश

3- श्रीमती कृष्णा वी. कोठारी, पूर्वी उत्तरप्रदेश

4- श्रीमती सुषमा चांडक, मुंबई प्रदेश

5- श्रीमत अर्चना सारडा, नेपाल प्रदेश

समिति प्रमुख होने के नाते सभी लेखों का सूक्ष्मता पूर्वक मंथन किया और उससे जो सार निकला उनका सारभूत मंथन के मोती मैं अपने शब्दों में प्रस्तुत कर रही हूं।

सुलेखा समिति की प्रथम राष्ट्रीय स्तर की निबंध प्रतियोगिता ''महिलाओं की शिक्षा का स्वरुप कैसा हो'' ने सफलता के नए कीर्तिमान बनाये। ये सफलता राष्ट्रीय नेतृत्व, सुलेखा सदस्यों व सभी प्रदेश पदाधिकारियों की संगठन के प्रति समर्पित सद्भावना का परिणाम है।

सत्ताईस प्रदेशों से इक्यासी निबंध आये। सभी प्रतियोगियों ने अच्छा प्रयास किया। वे महिलाएं जो घर गृहस्थी में रमी हुई हैं और घर की चारदीवारी को ही अपनी दुनिया मान कर उसी में खुशी का अनुभव करती हैं, उनके द्वारा अपने विचारों को अभिव्यक्त करना और दृढ़ता से सबके सम्मुख रखना सचमुच प्रसन्नता का विषय है। धीरे-धीरे ही सही इन प्रयासों से जन-जागृति तो आयेगी ही। इन सभी निबंधों को पढ़ने के बाद कुछ बातें ऐसी थीं जिन्हें मैं आपके साथ बांटना चाहूंगी।

प्रत्येक निबंध में सभी ने एक बात लिखी कि पढ़ाई पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए। पौराणिक, ऐतिहासिक महिला चरित्रों से आज की नारी की तुलना अधिकांश ने की। मुगल अत्याचारों को सर्वसम्मति से आज की नारी की दुर्दशा का व समाज में फैली घूंघट प्रथा जैसे कुरीति का एक बड़ा कारण भी माना। गर्भावस्था में स्वस्थ साहित्य का पठन-पाठन होना चाहिए जिससे गर्भस्थ शिशु पर अच्छे संस्कार पड़ें यह विषय दो-चार सदस्यों ने ही लिखा पर बहुत अच्छा लिखा।

कंप्यूटर शिक्षा के लिए भी सभी एकमत थे। टेक्नोलॉजी के युग में प्रगति के साथ कमदमताल करने के लिए इंटरनेट का उपयोग करने के लिए भी कई सदस्यों ने लिखा। आत्मरक्षा हेतु जुडो-कराटे जैसे उपाय भी बालिकाओं को सिखाये जाएं इस पर भी चर्चा थी। महिला संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं की भी जानकारी और उनका निदान हो सके इसके लिए कार्यक्रम आयोजित किये जाने पर भी बल दिया गया।

एक बात सभी लेखों में थी कि शिक्षा ऐसी हो जो घर और ऑफिस में सामंजस्य बिठा सके। महिलाओं को अपने पैरों पे खड़ा कर सके जिससे आपात काल में वे असहाय न रहें और स्वयं को संभाल सकें। महिला अधिकार के कानूनों की समुचित जानकारी दी जाये इस पर भी बल था। सभी ने लिखा था कि अपनी संस्कृति से सामंजस्य बैठा कर नवीन का स्वागत करें।

कुछ प्रतियोगियों ने ही इस बात पर बल दिया कि शुरु से ही बेटों को भी इस बात की शिक्षा दी जाए कि स्त्री का सम्मान कैसे करना चाहिए जिससे सुरक्षा संबंधी समस्याओं में कमी आये और समाज का संतुलन बना रहे। व्यवसाय से जोड़ने वाली प्रोफेशन उच्च शिक्षा पर बल दिया तो सामाजिक सांस्कृतिक जुड़ाव पर भी सभी ने बल दिया।

यद्यपि अधिकांश लेख अच्छे लिखे गये थे, पर चयन प्रक्रिया के कुछ नियम होते हैं जिन्हें मानना चयनकर्ता का परम धर्म होता है। कुछ लेख शब्दसीमा में नहीं थे यानी या तो 600 शब्द या सीधे 1500 शब्द तक। कई निबंधों को

बहुत खराब तरीके से टाइप किया हुआ था जो पढ़ने मेंही नहीं आ रहा था। ऐसे कई कारणों से बहुत से लेख प्रतियोगिता से बाहर हुए।

कुल मिलाकर लेखों के विचार काफी तर्कसंगत व्यवहारिक व दिलचस्प थे। सभी समाजजनों को चिंतन–मनन व अपने विचारों को लेखनीबद्ध करने के अवसर मिले इस दिशा में एक अच्छा प्रयास रहा। प्रथम तीन निबन्ध आपके चिन्तन हेतु प्रकाशिक कर रहे हैं।

सुलेखा समिति प्रभारी

श्रीमती मंजू मानधना, दिल्ली

प्रथम स्थान–

उच्च लक्ष्य की सीढ़ियों पर, प्रयासों की ज्योति जलायें।

महिला के सम्पूर्ण विकास के लिए, सब मिल शिक्षा का नव दीप जलायें।

शिक्षा क्या होती है? यह वह होती है जो किसी भी मानव को सही अर्थो में मनुष्य बनाती है। अच्छे बुरे का भेद सिखाती है। वह किसी को भी –

''असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतंगमय''

की अविरल यात्रा पर ले जाती है।

महिलाओं पर व्यक्तिगत विकास के साथ–साथ भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करने की, समाज का निर्माण करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है इसीलिए महिला शिक्षा के प्रारूप पर सभी का ध्यान आकर्षित करना एक सामयिक विषय है।

जीवन एक कमल पुष्प की तरह होता है और उसका अनुपम सौंदर्य तभी होता है जब सभी पंखुड़ियां समान रूप से पल्लवित हों। महिलाओं की शिक्षा का प्रारूप भी ऐसा ही हो जो उनमें सम्पूर्ण सोलह कलाओं का विकास कर सके। शिक्षा केवल विद्यालय एवं शिक्षण संस्थाओं तक सीमित नही की जा सकती है, वह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

अब हम विभिन्न अवस्थाओं एवं विभिन्न गुणों के अनुसार महिलाओं की शिक्षा पर प्रकाश डालेंगे।

गर्भावस्था से शिक्षा: शिशु (बालक, बालिका) की प्रथम गुरु माता होती है। और गर्भावस्था के समय माता को सही मार्गदर्शन देकर शिक्षा का शुभारम्भ किया जा सकता है। हमारे यहां धार्मिक ग्रंथों के पठन एवं श्रवण की सदैव अनुकरणीय एवं अतुलनीय परम्परा रही है जो मानवीय गुणों की नींव को सुदृढ़ करती है। साथ ही सुमधुर शास्त्रीय संगीत एवं शिशु के साथ सकारात्मक बातचीत शिक्षा का प्रभावी माध्यम हो सकती है।

बालपन में शिक्षा : बाल्याकाल में बुद्धि तीक्ष्ण होती है एवं ग्रहण करने की शक्ति चरम पर। एक शोध के अनुसार इस समय जितनी भी भाषाएं सिखाई जायें वह सीख सकती है। उन्हें धार्मिक श्लोक इत्यादि सिखा कर धर्म से परिचय कराया जा सकता है। कथा कहानियों से जीवन की सीख दी जा सकती है। खेल विद्यालय या घर में विभिन्न खिलौनों द्वारा उनकी तार्किक एवं बौधिक बुद्धि का विकास खेल–खेल में किया जा सकता है।

खेल एवं नर्सरी पाठशाला : यह समवयस्क, हमउम्र बालिकाओं से जुड़ने का छात्राओं का पहला अवसर होता है। इसमें सामाजिक एवं सहयोग की भावना का विकास किया जाना चाहिए।

पाठशाला में शिक्षा : प्रथम से आठवीं कक्षा तक विद्यालय का समय सुबह 7:00 बजे से मध्यान्ह 2:00 बजे तक हो। शिक्षा पुस्तकों के साथ–साथ व्यवहारिक प्रोजेक्ट्स द्वारा दी जाये। पाठशाला में योग एवं आत्मरक्षा जैसे–जुडो–कराटे जैसी महत्वपूर्ण विद्याओं को भी महत्व दिया जाये। दैनिक प्रशिक्षण दिया जाये एवं सभी के लिए अनिवार्य विषय बनाया जाये। पढ़ाई मध्यान्ह तक पूर्ण होने से लाभ यह होगा कि छात्राएं विभिन्न कलाओं से जुड़ सकती हैं, जैसे महाराष्ट्र में देखा जा सकता है।

शिक्षा का प्रारूप कक्षा 9 से 12 तक : यह अनवरत, बिना थके परिश्रम करने का समय होना चाहिए। इस समय वह अपना सम्पूर्ण ध्यान प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पर केन्द्रित करें। उन्हें प्रमुख विषय जैसे विज्ञान, गणित, वाणिज्य, कला आदि पर विस्तार से शिक्षा दी जाये। कम्प्यूटर पर भी ध्यान दे। इस प्रकार वह व्यवसायिक रुप से आत्मनिर्भरता की ओर अपने कदम बढ़ा सकती है। बाल्याकाल में कला से जुड़ने के के कारण वह किसी कला को भी अपनी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए अपना सकती है। इस तरह वह अपनी रूचि अनुसार सही निर्णय लेने में सक्षम होगी।

व्यवसायिक शिक्षा का प्रारूप : आज की व्यवस्था में कुछ फेर बदल अति आवश्यक है। सबसे प्रथम तो जातिगत आरक्षण को हटाना चाहिए और न ही महिला आरक्षण की आवश्यकता है। आज वह किसी से भी कम नहीं है।

कॉलेज में प्रवेश के बाद उन्हें पाठ्यक्रम दिये जायें, इन्हीं विषयों पर अलग–अलग अध्यापक कक्षाएं लें, परन्तु मात्र निर्णय लें कि कौन से प्राध्यापक से वह विषय की जानकारी लेना चाहता है। परीक्षा की तिथि भी वह चुने जैसे जी.आर.ई. इत्यादि में होता है। ऐसी व्यवस्था (प्राध्यापक चयन की) आज बी.आई.टी.एस., पिलानी में है। इससे जो तीक्ष्ण बुद्धि छात्राएं हैं उनका समय व्यर्थ नहीं होता, उन्हें परीक्षा के लिए पूरी कक्षा की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती है, वे अपने विषय पूरे करते हैं एवं आगे बढ़ते जाते हैं। इससे छात्राएं जीवन में समय प्रबंधन, परिश्रम के महत्व के साथ–साथ अनुशासन का पाठ भी सीखती हैं। कहा गया है ''स्वयं पर अनुशासन कीजिये तभी आप आने वाले कल पर शासन कर सकेंगे।''

विकसित देशों के इस प्रारुप को हमारे देश में भी अपनाना चाहिए। कुछ अन्य विषयों के समावेश के बिना महिला शिक्षा का प्रारूप अधूरा होगा।

खेलकूद : पढ़ाई के साथ–साथ एवं अवकाश में भी खेलकूद के प्रति उनकी रुचि को बढ़ाना चाहिए, खेलकूद बालिकाओं को जीत की खुशी के साथ–साथ बिना निराशा या अवसाद के हंसते हुए पराजय का सामना करने का महत्वपूर्ण पाठ भी सिखाते हैं। स्वास्थ्य एवं सर्वांगीण विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। खेलकूद महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पहचान दिला सकता है और हमारे देश में कई सिंधू एवं साक्षी जैसी प्रतिभाएं उभर सकती हैं।

वित्तीय शिक्षा : बचपन से ही बड़ों के संरक्षण में बालिकाओं को एक निश्चित धन राशि दी जाये जिससे उनमें सही रूप से खर्च करने, बचत करने एवं संभालने की समझ को विकसित किया जाये। इस प्रकार वह वित्तीय प्रबंधन भी सीख सकती हैं।

अधिकारों की शिक्षा : विश्वविद्यालयों में, महिला संगठनो में, संचार माध्यमों द्वारा प्रमुख वक्ताओं, अधिकार विशेषज्ञों के समावेशों का भी प्रबंध किया जाना चाहिए ताकि महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति सजग हों। उनका शोषण न हो महिलाओं को भी अपनी ओर से भी अपने अधिकारों के लिए चेष्टा करनी होगी।

''ख्वाहिशों से नहीं गिरते फूल झोली में
कर्म की शाख को हिलाना होगा
कुछ नहीं होगा कोसने से अंधेरे को
अपने हिस्से का दिया खुद ही जलाना होगा''

समाज से जुड़ाव : सामाजिक संस्थाएं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठन, महिला संगठन, छात्राओं को विभिन्न सेवा कार्यो जैसे असाध्य रोगों के जागरूकता अभियान, वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम, मानसिक रुप से अविकसित बच्चों से जुड़ाव, अकेलेपन की त्रासदी झेलते वृद्ध दंपतियों को सहयोग जैसे कार्यो के लिए प्रोत्साहन शिक्षा का अभिन्न अंग बने। संस्थाएं इन कार्यो के लिए उन्हें प्रमाणपत्र दे जो उनके बायोडेटा का महत्वपूर्ण अंग बने एवं व्यवसायिक एवं शैक्षणिक उन्नति के लिए इन प्रमाणपत्रों को अनिवार्य माना जाये।

''गुण नहीं तो रुप व्यर्थ है, नम्रता नहीं तो विद्या व्यर्थ है
परोपकार न करने वाले का तो, मानव जीवन व्यर्थ है''

आशा है अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला मंडल इस राह पर पहले से चल रहा है और इसे नए शिखर पर ले जायेगा।

धर्म, संस्कृति, पारिवारिक शिक्षा एवं उपसंहार

आज की शैक्षणिक व्यवस्था आर्थिक रुप से महिलाओं को सक्षम बना रही है यह हम सर्वत्र देख रहे हैं किंतु इसके परिणाम स्वरुप जो पारिवारिक विघटन हो रहे हैं उसे रोकेने के लिए धर्म, संस्कृति एवं पारिवारिक एकता की शिक्षा देना अति आवश्यक है, जो उन्हें माता–पिता एवं परिवार के सदस्य अपने आचरण, आपसी सामंजस्य के उदाहरण से ही दे सकते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पारिवारिक शिक्षा के इस पक्ष में नए आयाम जोड़े जाएं। महिलाओं की शिक्षा का प्रारुप तभी सही होगा जब पुरुषों की शिक्षा के

प्रारुप पर भी ध्यान दिया जायेगा। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, परिवार एवं जीवन को परिपूर्ण करते हैं। पुरुष को भी बचपन से नारी का सम्मान, परिवार में सहयोग, घरेलू कार्यों में भागीदारी का प्रशिक्षण दिया जाये। परिवार में पुत्र एवं पुत्री को बिना भेद भाव के सिखाया जाये तभी नारी की शिक्षा उसकी उपलब्धियां परिवार में खुशहाली ला सकेगी, वास्तविक प्रसन्नता के साथ एक सशक्त एवं खुशहाल समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

''चलो आओ बुनें मिलकर सुनहरे रेशमी सपने
कुछ आकाश में उड़ने के सपने,
तो कुछ धरती से जुड़े सपने।
वो सपने देखकर जीवन में जिनसे रंग भर जाये
हमारी शिक्षा के सपने, हमारे सम्मान,
सुरक्षा और प्यार के सपने।।''

बदलता परिवेश प्रगति की निशानी है,
समाज से बुराइयां हटाकर अच्छाइयां अपनानी है।
शिक्षा ऐसी हो जिससे सर्वांगीण विकास हो। हर चुनौती वह पार करे, सुरक्षा के लिए रहे न किसी पर निर्भर पर प्रेम की निर्झरणी बनी रहे। संवेदनशीलता व संस्कृति का पाठ भी पढ़ती रहें। सही गलत का भेद वह समझे आर्थिक रुप से अपने पैरों पर खड़ी रहें। उसे स्पर्धा सभी से करती है तो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में भी कमी न करें। लक्ष्य रखें सदैव समक्ष खड़ी रहे पुरुष के समकक्ष, न पीछे हटे न छूटे धैर्य, अपने अधिकारों के प्रति सजग रहे। अंत में यही कहना चाहूंगी महिला शिक्षा का प्रारुप हो ऐसा –

''मन में दृढ़ निश्चय की ध्वनि हो
लक्ष्य समर्पित प्रखर अग्नि हो
नील गगन में जैसे रवि हो
नारी की ऐसी उत्कंठ छवि हो''

प्रथम स्थान: रमा भूतड़ा
मंचेरियल–504208

द्वितीय स्थान–

बात ही राज की कुछ ऐसी है जिन्दगी की,
सच में शिक्षा व उसका स्वरूप है सगी बहन सरीखी।

स्वतंत्रता के बाद सरकार, महिला संगठनों, महिला आयोगों आदि के प्रयासों से महिलाओं के लिए विकास के द्वार खुले, उनमें शिक्षा का प्रसार बढ़ा जिससे उनमें जागृति आई, आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ, परिणामस्वरूप वे प्रगति पथ पर आगे बढ़ीं। आज महिलाएं राजनीति, समाजसुधार, शिक्षा, पत्रकारिता, साहित्य विज्ञान, उद्योग, व्यावसायिक प्रबंधन, शासन–प्रशासन, चिकित्सा, पुलिस, सेना, कला, संगीत, खेलकूद आदि क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। एक ओर यह परिदृश्य अत्यधिक उत्साहवर्धक है, परंतु वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि आज भी शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। आज लड़कियों के स्नातक या स्नातकोत्तर कराने के बाद उनकी शादी कर देते हैं, ये नहीं सोचते कि आगे चलकर क्या करेंगी। बचपन से ही उनकी शिक्षा का कोई उद्देश्य नहीं होता है। इसलिए आवश्यकता है समाज को स्त्री शिक्षा के बारे में सोचने की कि स्त्रियों की शिक्षा रचनात्मक ढंग से होनी चाहिए, जिससे वे आत्मनिर्भर बन जायेंगी, समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और समाज की भी प्रगति होगी।

- महिलाओं की शिक्षा का भावी स्वरूप – हमारे देश में महिलाओं को पुरूषों के साथ समाजिक और आर्थिक जिम्मेदारियां भी निभानी पड़ती है। इसलिए महिलाओं की शिक्षा की ऐसी योजना बनाई जाए कि वे घर और बच्चों के उत्तरदायित्व को निभाने के साथ–साथ उनके जीवन को भी सफल बनाने में सहायक हों। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति में कुछ परिवर्तन करने की आवश्यकता है।
- जीवनोपयोगी शिक्षा का समावेश किया जाए – जिस प्रकार पुरूषों के लिए जीवन की समस्याओं को हल करने वाली शिक्षा की जरूरत है उसी प्रकार महिलाओं को भी वह शिक्षा चाहिए जिसे प्राप्त कर वे अपना, अपने परिवार का, बच्चों का जीवन प्रसन्नता, सद्भावना, संपन्नता, निरोगता एवं सुख–शांति से परिपूर्ण बना सकें। महिलाओं की शिक्षा में ऐसे विषयों का समावेश किया जाना चाहिए, जो उनके जीवन में आने वाली समस्याओं का हल खोजने में सहायक हो सके।

- अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित किया जाये – महिलाओं को शिक्षा प्रदान करते समय यह देखना होगा कि वे अपने विचारों को ठीक प्रकार से अभिव्यक्त कर पाती हैं या नहीं? उनकी अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाने का प्रयत्न करना होगा। उनकी विवेक बुद्धि को उपयुक्त वाणी मिले, इसके लिए शिक्षकों को प्रयास करना होगा। उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित करना होगा कि वे जब बोलें तो उनके शब्दों में उनके विचार और उनकी भावनाएं समुचित रीति से प्रतिविम्बित हो।
- व्यक्तित्व विकास की शिक्षा दी जाए – स्त्री का आत्मविश्वास और स्वाभिमान लौटाया जाय, उसे स्त्रीत्व और सतीत्व के स्तर से ऊपर उठकर सच्चे अर्थों में मानवीय दर्जा हासिल करने में सक्षम बनाया जाए, साथ ही उसे व्यक्तित्व विकास का ऐसा पाठ पढ़ाया जाए, जिससे वह स्वाभिमानी तो बने लेकिन अहंकारी नहीं। उनका व्यक्तित्व इस तरह से गढ़ा जाए कि वे समाज और परिवार के प्रति जिम्मेदार बनें।
- भारतीय संस्कृति की शिक्षा दी जाए – नारी शिक्षा को पाश्चात्य चकाचौंध से बचाने की आवश्यकता है। भारतीय भाषा और संस्कृति स्वर्णतुल्य है, यह समझाने का प्रयास शिक्षकों को करना होगा। शिक्षा के माध्यम से उन्हें अपनी भारतीय परंपराओं की जानकारी मिलनी चाहिए। नारी को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए, जिससे वह जीवन मूल्यों की हिफाजत कर सके और विकृतियों और विडंबनाओं से समाज को छुटकारा दिला सके।
- अनौपचारिक शिक्षा का कार्यक्रम चलाया जावे – ऐसी महिलाएं जिनकी स्कूली शिक्षा पूरी नहीं हो पाई है या जो ऐसे स्थानों पर रहती हैं जहां स्कूल नहीं है, या जो काम में लगी हुई हैं और दिन के समय स्कूल नहीं जा सकती हैं, उन सभी के लिए अनौपचारिक शिक्षा का कार्यक्रम चलाया जाए। अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए आधुनिक तकनीकी उपकरणों की सहायता ली जाए।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाए – महिलाओं के लिए माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शरू किये जाएं, ताकि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा सके। इसमें माध्यमिक स्कूल के बाद स्कूल छोड़ने वाली छात्राओं को विशेष रूप से अवसर दिया जाना चाहिए। स्थानीय स्तर पर नौकरी और व्यवसाय की संभावना को देखकर पाठ्यक्रमों में बदलाव किया जाना चाहिए।
- महिलाओं की शिक्षा में किये जाने वाले पाठ्यक्रम संबंधी सुधार – महिलाओं के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए, जो स्कूली शिक्षा के साथ–साथ उनकी सभ्यता और संस्कृति से जुड़ी हुई हो तथा उस शिक्षा के द्वारा वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इसलिए महिलाओं की शिक्षा के लिए पाठ्यक्रमों में कुछ सुधार की आवश्यकता है।

1. महिला शिक्षा पाठ्यक्रमों का उद्देश्य व्यावसायिक निपुणता देना ही नहीं होना चाहिए अपितु कला अथवा हस्तकला भी पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग होना चाहिए। महिलाओं की अभिरूचियों के विकास के लिए संगीत, चित्रकला, नृत्य, गृहविज्ञान आदि विषयों की पढ़ाई का उचित प्रबंध किया जाना चाहिए।
2. महिलाओं के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, घरेलू अर्थ प्रबंध, वस्त्रों की सिलाई, रंगाई, गृह–व्यवस्था, पुस्तकालय, सांख्यिकी, बागवानी आदि पाठ्यक्रम शुरु किये जाने चाहिए, जो खासतौर से महिलाओं के लिए ही तैयार किये गये हों। इन नए प्रशिक्षणों को युक्तिसंगत ढंग से मानविकी, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रमों के साथ जोड़ा जाना चाहिए ताकि वे अपने परिवार का, बच्चों का जीवन प्रसन्नता, सद्भावना, सम्पन्नता, निरोगता एवं सुख–शांति से परिपूर्ण बना सकें। महिलाओं की शिक्षा में ऐसे विषयों का समावेश किया जाना चाहिए, जो उनके जीवन में आने वाली समस्याओं का हल खोजने में सहायक हो सकें।
3. पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की छवि को अधिक सकारात्मक रूप में प्रदर्शित किया जाना चाहिए। महिलाओं के प्रिय त्योहार, खेल और महान नारियों की जीवनियां आदि पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित की जानी चाहिए। भाषा और सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की आवश्यकताओं, अनुभवों और समस्याओं का ध्यान रखा जाना चाहिए।

4. पाठ्यपुस्तकों में ऐसी आधारभूत सूचनाएं दी जानी चाहिए, जिनमें बच्चों, महिलाओं के लिए संरक्षात्मक कानून की जानकारी हो तथा संविधान से उनके उदाहरण दिये जाएं, ताकि वे उसमें निहित सभी अधिकारों और अन्य बुनियादी संकल्पनाओं से परिचित हो सकें।

5. वयस्क महिलाओं के लिए संक्षिप्त पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जाए। यह व्यवस्था विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में की जाए क्योंकि महिलाओं के ऊपर घर की कई तरह की जिम्मेदारियां होती हैं, इसलिए उनकी शिक्षा के लिए कक्षाएं उपयुक्त समय पर लगाई जाएं।

6. माध्यमिक शिक्षा के बाद विस्तृत व्यावसायिक पाठ्यक्रम होने चाहिए। महिलाओं को व्यावसायिक योग्यता देने के उद्देश्य से उन्हें साधारण शिक्षा के साथ अलग से प्रारम्भ किया जाना चाहिए। उनमें इतनी विभिन्नता होनी चाहिए कि वे महिलाओं की आवश्यकता को पूरा कर सके।

7. गणित और विज्ञान विषय महत्वपूर्ण हैं। इनके ही द्वारा विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने में पर्याप्त सुविधा मिलती है। अत: जो महिलाएं गणित और विज्ञान विषय पढ़ती हैं, उन्हें विशेष प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

8. विश्वविद्यालय शिक्षा के बाद विविध व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जाए, जिससे महिलाएं अधिक से अधिक व्यवसायों में उत्तरदायित्व और प्रबंधकों के पद का भार संभाल सकें।

9. महिलाओं को विशेष करके भारतीय संविधान के विधि कानून की विभिन्न धाराओं का परिचय मिल सके, ऐसी शिक्षा का पाठ्यक्रम तैयार करके ग्रामीण क्षेत्रों में भेजा जाना चाहिए, जिससे ग्रामीण महिलाएं भी अपने ऊपर हो रहे शोषण के खिलाफ इस विधि का सहारा लेकर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकेंगी।

उम्मीद करती हूं कि सरकार और समाज महिला शिक्षा को महत्वपूर्ण समझकर इस संदर्भ मे कोई प्रयास अवश्य करेंगे क्योंकि एक महिला सिर्फ एक महिला ही न होकर एक बेटी, एक बहन, एक बहू, एक माँ, एक सास भी होती है, अर्थात् एक महिला को शिक्षित करके आप इतने सारे रूपों में उसे सम्पूर्णता प्रदान करेंगे।

रमा साबू, इन्दौर

तृतीय स्थान–

''स्त्री शिक्षा'' स्त्री और शिक्षा को अनिवार्य रुप से जोड़ने वाली अवधारणा है। इसका एक रुप शिक्षा में पुरूषों की तरह शामिल करने से संबंधित है। दूसरे रुप में यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को संदर्भित करता है। भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान स्त्रियों को पुरूषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी। वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि स्त्री को भी उतना शिक्षित होना चाहिए जितना की पुरुष हो। यह सिद्ध सत्य है कि यदि माता शिक्षित न होगी तो देश की संतानों का कदापि कल्याण नहीं हो सकता।

गांधीजी ने कहा था कि एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। समाज द्वारा पुरूष को शिक्षित करने का लाभ केवल पुरूष को होता है। जबकि महिला शिक्षा का स्पष्ट लाभ परिवार, समाज व राष्ट्र को होता है।

इस संदर्भ में युगनायक एवं राष्ट्रनिर्माता स्वामी विवेकानंद का यह कथन उल्लेखनीय है – ''किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहां की महिलाओं की स्थिति। हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुंचा देना चाहिए जहां वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें। हमें नारी शक्ति के उद्धारक नहीं, वरन् उनके सेवक और सहायक बनना चाहिए। भारतीय नारियां संसार की अन्य किन्हीं भी नारियों की भांति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती हैं। आवश्यकता है उन्हें उपयुक्त अवसर देने की। इसी आधार पर भारत के उज्वल भविष्य की संभावनाएं सन्निहित हैं।''

अशिक्षा की शिकार नारी अनेकानेक पूर्वाग्रहों, अंधविश्वास, रूढ़ियों, कुसंस्कारों से ग्रस्त होकर अपनी अधिकारों से वंचित हो जाती हैं। अगर नारी शिक्षित होकर एक कुशल इंजीनियर, लेखिका, वकील, डॉक्टर बन भी जाती हैं, तो भी कई बार पति व समाज द्वारा ईर्ष्यावश उसका शैक्षणिक शोषण किया जाता है। परिणामस्वरूप नारी को शिक्षित होते हुए भी पति का अविश्वास झेलकर

आर्थिक, मानसिक व दैहिक रूप से उत्पीड़ित होना पड़ता है।

प्राचीन काल से ही नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण रहा हे, ''नारियों के लिए पढ़ने की क्या जरूरत, उन्हें कोई नौकरी–चाकरी तो करनी नहीं, न किसी घर की मालकिन बनना है, उसके लिए तो घर 'गृहस्थी' का काम सीख लेना ही पर्याप्त है।'' एक तरह से समाज की यह विचारधारा ही शैक्षणिक शोषण के आधार को और भी मजबूत कर देती है।

शिक्षा प्राप्त करके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का अर्थ यह नहीं है कि नारी शिक्षत होकर पुरूष को अपना प्रतिद्वन्दी मानते हुए उसके सामने ही मोर्चा लेकर खड़ी हो जाए। बल्कि वह आर्थिक क्षेत्र में भी पुरूष के बराबर समानता का अधिकार प्राप्त करके उसके साथ मैत्रीपूर्ण संबंध के समीकरण बनाने में सक्षम बनें। जिस प्रकार शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। अगर नारी ही शिक्षित नहीं होगी तो वह न तो सफल गृहिणी बन सकेगी और न कुशल माता। समाज में बाल अपराध बढ़ने का कारण बालक का मानसिक रूप से विकसित न होना है। अगर एक मां ही अशिक्षित होगी तो वह अपने बच्चों को सही मार्गदर्शन करके उनका मानसिक विकास कैसे कर पायेगी और एक स्वस्थ समाज का निर्माण एवं विकास सम्भव नहीं हो सकेगा।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाओं को सिर्फ साक्षर ही नहीं, अपितु 'शिक्षित' किये जाने की आवश्यकता है। इसके लिए उनकी शिक्षा के स्वरूप में निम्नलिखित बिंदुओं का समावेश समीचीन होगा:–

1. आत्मनिर्भरता :– परनिर्भरता, परतन्त्रता की ओर ले जाती है, वहीं आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान को जगाती है। महिला शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना सके। परिवार पर किसी आकस्मिकता अथवा तंगहाली की स्थिति में महिला भी गृहस्थी की गाड़ी में बराबर का पहिया बन सके, ऐसी तैयारी जरूरी है। एक शिक्षित महिला स्वरोजगार भी कर सके और कहीं उपयुक्त नौकरी भी हासिल कर सके, इतनी योग्यता तो शिक्षा–स्वरूप में निहित होना नितान्त अनिवार्य है।

2. अभिरूचि शिक्षण : महिलाओं को पारंपरिक शिक्षण देने की बजाय उनके बाल्यकाल / किशोरावस्था से ही उनकी अभिरूचियों एवं हुनर को पहचानकर उसी अनुरुप उन्हें इस क्षेत्र का विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। कौन जाने संगीत में निपुण कोई महिला लता मंगेशकर बन जाए, नृत्यकला में पारंगत कोई महिला मल्लिका साराभाई बन जाए, लेखनी की शक्ति से कोई अरुंधति राय बन जाए, अर्थशास्त्र में रूचि लेकर कोई चन्दा कोचर बन जाए अथवा ऐश्वर्या राय बनकर कोई विश्व पटल पर भारतीय सौंदर्य की पताका फहराये।

3. तकनीकी समृद्धि : आज के बदलते परिप्रेक्ष्य में 'गांवों की चौपाल' का स्थान ट्विटर ने ले लिया है। फेसबुक ने ले लिया है एवं ''और क्या चल रहा है'' का स्थान वाट्पएप ने ले लिया है। ऐसे में आज की महिला को ऐसा शिक्षण–प्रशिक्षण दिया जाना अनिवार्य है जो उन्हें नए यांत्रिकी–अभियांत्रिकी बदलावों से अप–टू–डेट रखें। उन्हें कंप्यूटर, लेपटॉप और मोबाइल चलाना भी उनकी शिक्षा प्रणाली में ही सिखाया जाना जरूरी है। साथ ही जिस प्रकार वाहन चलाना सिखाते समय यह भी बताया जाता है कि उचित सुरक्षा मापदण्डों का पालन भी जरूरी है, उसी प्रकार तकनीकी ज्ञान व सोशल मीडिया का ज्ञान देते समय ही यह भी बताया जाना चाहिए कि इन साधनों को सुरक्षित रूप से कैसे चलाया जाए ताकि नैतिकता एवं मर्यादा की सीमाओं का उल्लंघन कतई न हो और कोई भी तकनीकी शक्ति को कमजोरी बनाकर उसका दुरुपयोग न कर बैठे।

4. स्वास्थ्य शिक्षा : ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण संभव है।'' महिलाओं के शिक्षण में स्वास्थ्य शिक्षा का अनिवार्य समावेश होना जरूरी है, ताकि वे न केवल स्वयं को चुस्त दुरूस्त रख सकें, अपितु अपने बच्चों व परिवारजनों के उत्तम स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रह सकें। स्वस्थ परिवार मिलकर ही स्वस्थ समाज व स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे। इसके लिए शिक्षण पाठ्यक्रम में योग–प्राणायाम, पंचकर्म चिकित्सा एवं रसोईघर औषधि के प्राचीन उपक्रमों के साथ ही नवीन शिक्षा प्रणालियों की सतही जानकारी भी दी जानी जरूरी है। घर में अशक्त / वृद्धजनों की सेवा कैसे की जाए इसका भी व्यवहारिक ज्ञान देना चाहिए। खेलकूद में भाग लेने के लिए बालिकाओं को भी बालक के समान ही प्रोत्साहित एवं

प्रेरित किया जाना आवश्यक है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि जब मूलभूत सुविधाओं के अभाव के बावजूद देश में मैरीकॉम, गीता–बबीता फोगाट, पी.वी. सिन्धु और दीपा कर्माकर जैसी प्रतिभाएं देश का परचम लहरा सकती हैं तो उचित शिक्षण–प्रशिक्षण पाकर हमारे देश की महिलाएं बल–बुद्धि–विद्या की सभी प्रतिस्पर्धाओं में अग्रणी रह सकती हैं।

5. आत्मरक्षा प्रशिक्षण : 'निर्भया काण्ड' ने हर उस परिवार को भयाक्रान्त कर डाला, जिस परिवार में बेटी है, बहू है, बहिन है, मां है या मातृशक्ति है। ''या देवी सर्वभूतेषू शक्तिरूपेण संस्थिता'' की पौराणिक उक्ति को मूर्तरुप में लाने के लिए और नारी की शक्ति स्वरूपा को जगाने के लिए आवश्यक है कि जूडो–कराटे, ताइक्वान्डो, मल्लयुद्ध, कुश्ती जैसी क्रीड़ाएं अनिवार्यत: उसके पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जाएं।

इतिहास गवाह है कि स्त्री को ''कोमलांगी'' मानकर सदैव उसे शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता रहा है। शारीरिक यंत्रणाएं कब मानसिक वेदना का नासूर बन जाती है, यह परिवार और समाज कभी समझा नहीं पाता। अत: ''कोमल है, कमजोर नहीं'' की भावना कूट–कूट कर भरने पर ही महिलाएं शारीरिक रूप से सुदृढ़ व मानसिक रूप से सशक्त बनकर एक सुरक्षित व मर्यादित समाज की नींव रख सकेंगी।

6. गृहकार्य प्रवीणता : महिलाओं की शिक्षा के साइड इफेक्ट के रूप में यह देखने में आता है कि जो बच्चियां पढ़ाई–लिखाई में ज्यादा ध्यान देती हैं, वे गृहकार्यो में उतनी प्रवीण नहीं रह जातीं। आज की शिक्षा प्रणाली में सिर्फ अच्छे अंकों को ही दक्षता का द्योतक मान लिया गया है, जबकि महिला शिक्षा को अपने उस मूल उद्देश्य से कदापि नहीं भटकना चाहिए कि अधिकांश महिलाओं की असली कार्यस्थली उनका घर होती है। पढ़ाई का अर्थ सिर्फ यह न समझा जाए कि नौकरी हेतु कौशल अर्जित करना है, अपितु पढ़ाई में इस हुनर का भी समावेश हो कि जो किशोरियां कल की महिला बनकर गृहस्थी का बोझ उठाने जा रही हैं, उन्हें पाककला, सफाई कला, सिलाई कला इत्यादि का भी प्रायोगिक ज्ञान होना आवश्यक है। यदि पेट के रास्ते दिल में जगह बनानी है तो विविध व्यंजनों का प्रशिक्षण जरूरी है एवं यदि स्वच्छ भारत की अभिकल्पना करनी है तो स्वच्छ घर कैसे रखा जाए, इसका भी ज्ञान अपरिहार्य है।

7. देश और दुनिया की जानकारी : आज की महिला को घूंघट व बुर्के की कूप मंडूकता से निकल कर देश और दुनिया में होने वाले विविध आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व सामरिक गतिविधियों से भी रू–ब–रू रहने की आवश्यकता है, ताकि उनके होने वाले प्रभावों की विवेचना करके वे अपने बच्चों व परिवार का उज्ज्वल भविष्य चुन सके।

8. राजनीतिक ज्ञान : देश का भविष्य तभी उज्जवल होगा यदि देश की आधी आबादी (महिला शक्ति) अपने मताधिकार का मतिपूर्ण सदुपयोग करे। जबकि वस्तुत: आज की शिक्षित महिलाएं या तो वोट देने जाती ही नहीं, या फिर मतदान उन्हें करती हैं, जिन्हें उनके पति/घर के पुरूष सदस्य करने को कहते हैं। ऐसे में मतदान जैसी शक्ति का प्रयोग भी वे स्वेच्छा व स्वविवेक से न करके मात्र कठपुतलियों की भांति करती हैं। अत: जरूरी है कि महिलाओं की शिक्षा प्रणाली में राजनीतिक ज्ञान एवं मताधिकार की सजगता का समावेश हो, ताकि बेहतर राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की सक्रिय साझेदारी सुनिश्चित की जा सके।

9. सामाजिक सोद्देश्यता : महिला को इस प्रकार शिक्षित किया जाए कि वे स्वयं तो समाज के विकास हेतु योगदान दे ही, साथ ही अपने बच्चों को भी नैतिकता, मर्यादा, ईमानदारी व परिश्रम का ऐसा पाठ पढ़ाये कि वे बच्चे आगे चलकर एक सशक्त समाज के निर्माण में सहभागी हो सकें।

उक्त ''नवरत्नों'' स्वरूप ''नव बिंदुओं'' का समावेश महिलाओं की शिक्षा प्रणाली में किये जाने पर निश्चित रूप से न केवल वे स्वयं शारीरिक, आर्थिक व मानसिक तौर पर सुदृढ़ हो सकेंगी, अपितु महिलाओं को उनका गौरवमयी स्थान परिवार–समाज–राष्ट्र में सुनिश्चित हो सकेगा तथा ''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता:'' की सूक्ति चरितार्थ हो सकेगी।

प्रेमलता मानधना
पाली–मारवाड़ (राज.)

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की उपाध्यक्षा की पूर्वांचल भ्रमण रिपोर्ट

पूर्वांचल उपाध्यक्ष – सरला काबरा (गुवाहाटी) एवं

पूर्वांचल सह मंत्री – मंजू कोठारी (कोलकाता)

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अन्तर्गत पूर्वांचल स्तर पर पूर्वांचल के सभी प्रदेश पदाधिकारियों के साथ अनेक प्रदेशों एवं जिलाओं में भ्रमण किया गया। कई जिलाओं में नवगठन भी किया गया एवं प्रदेश के कार्यक्रमों में सरला काबरा एवं मंजू कोठारी की उपस्थिति रही।

1. बिहार–झारखंड प्रदेश के चुनाव – 23.10.2016 को सरलाजी काबरा द्वारा
2. उड़ीसा के चुनाव – 14.01.2016 को सरलाजी काबरा द्वारा
3. बिहार–झारखंड, उड़ीसा का भ्रमण – 8.11.16 से 15.11.16 तक सरला काबरा द्वारा। मुजफ्फरपुर, कोडरमा, रांची, गुमला, जमशेदपुर, धनबाद, संबलपुर, कटक, भुवनेश्वर, बालेश्वर, झारसुगुड़ा
4. पूर्वोत्तर आसाम प्रदेश भ्रमण – 11.1.17 से 15.1.17 तक सरला काबरा एवं मंजू कोठारी द्वारा गुवाहाटी, नवगांव, तेजपुर, ढेरगांव, मिरयानी, टीटावर, जोरहाट, आमगुड़ी, डिब्रूगढ़, तिनसुखिया
5. बिहार–झारखंड का भ्रमण – 10.2.17 से 13.2.17 तक शोभाजी सादानी, सरला काबरा एवं मंजू कोठारी द्वारा किशनगंज, गुलाबबाग, फारबीसगंज, जोगबनी
6. नेपाल प्रदेश का भ्रमण– 13.2.16 से 16.2.16 तक शोभाजी सादानी, सरला काबरा एवं मंजू कोठारी द्वारा विराटनगर, लाहोन, काठमांडू, इतिहारी, मैची, बीरगंज।
7. पश्चिम बंगाल का भ्रमण – 16.2.17 से 17.2.17 तक शोभाजी सादानी, सरला काबरा एवं मंजू कोठारी द्वारा सिलीगुड़ी, जलपाईगुड़ी
8. कोलकाता में पदाधिकारियों के साथ बैठक – 1.3.17 शोभाजी सादानी, सरला काबरा, मंजू कोठारी एवं प्रदेश पदाधिकारी क्षरा पूर्वांचल के भावी कार्यक्रमों पर चर्चा
9. आसाम प्रदेश का भ्रमण– 3.4.17 – सरलाजी द्वारा मोरीगांव महिला समिति का गठन व नवगांव भ्रमण
11. सरला काबरा की कार्यक्रमों में उपस्थिति –श्रीमद्भागवत कथा (जोरहाट), प्रदर्शनी सहबिक्री (गुवाहाटी), राष्ट्रीय पदाधिकारियों का सम्मान समारोह (कोलकाता)
12. मंजू कोठारी की कार्यक्रमों में उपस्थिति – राष्ट्रीय पदाधिकारियों का सम्मान समारोह (कोलकाता), उत्कर्ष।
13. शोभायात्रा (कोलकाता)
14. भ्रमण के मुख्य उद्देश्य:

अ) श्रृंखलाबद्ध संगठन की विस्तृत जानकारी।

ब) फण्ड रेजिंग के कार्यक्रमों की जानकारी।

स) ग्यारह समितियों के अनुसार कार्यो को करने की प्रेरणा दी गई।

द) ग्रामीण विकास के वृहद कार्यो को करने के लिए माहेश्वरी संगठन के गुल्लक के माध्यम से फण्ड को सरल तरीके से इकट्ठा करने की जानकारी देना।

इ) राष्ट्रीय, आंचलिक, प्रदेश, जिला व शाखाओं के बारे में जानकारी देते हुए महिलाओं को राष्ट्रीय संगठन से जुड़ने की प्रेरणा दी गई।

फ) वर्कशॉप के माध्यम से महिलाओं में जागृति लाना व फण्ड इकट्ठा करना।

ज) युवा पीढ़ी को संगठन से जोड़ने हेतु उन्हीं के अनुरुप विभिन प्रतियोगिता एवं कार्यमों को करने का सुझाव देना।

ह) नवयुवती प्रतिभा मण्डल का गठन करके उन्हें प्रदेशों से जोड़ना।

॥ श्री ॥

विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ

श्रीमती सुनिता तापडीया

सौ. वैजयंती माहेश्वरी

श्रीमती भावना कुलधरीया

श्रीमती संध्या केला

श्रीमती जया राठी

श्रीमती सरिता सोनी

श्रीमती लक्ष्मी भट्टड

श्रीमती कविता सोमाणी

श्रीमती ज्योत्स्ना तापडीया

श्रीमती शिल्पा चांडक

श्रीमती अर्चना कोठारी

श्रीमती रुपल मोहता

श्रीमती सुनिता सोमाणी

॥ श्री ॥

विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ

श्रीमती पद्मादेवी मुंदडा

श्रीमती उषा करवा

श्रीमती ज्योती बाहेती

श्रीमती भारती राठी

श्रीमती पुष्पालता परतानी

श्रीमती कमला मोहता

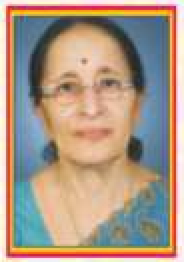
श्रीमती डॉ. सुधा राठी

श्रीमती डॉ. तारा माहेश्वरी

श्रीमती मिना सांवल

श्रीमती आशा लढ्ढा

श्रीमती निलिमा मंत्री

श्रीमती नीना भंडारी

श्रीमती सुशीला गांधी

धर्म यानें क्या?

एक प्रकार से हमारी पीढ़ी बहुत ही भाग्यशाली है कि हम अपने जीवन में एक सहस्त्रक से दूसरे सहस्त्रक में प्रवेश करने के साक्षी बने हैं (सन् 2000 से सन् 2001 में प्रवेश किया है)। किन्तु दुनिया के पिछले 100 वर्षों के इतिहास में यदि हम झांककर देखें तो पायेगे कि पिछले 100 वर्षों में अति वेग से बदलती राजकीय परिस्थिति, विचारों के बदलाव, भौगोलिक पुनर्रचना, दो महायुद्ध, पूरी दुनिया में राजकीय उथल-पुथल, बड़े राष्ट्रों में शीत युद्ध, आर्थिक और धार्मिक विचारों में आमूलाग्र बदल, जातीय समीकरण में बदलाव आदि यही पिछले 100 वर्षों का इतिहास रहा है। इन सभी तोड़फोड़, बदलाव और पुनर्निर्माण की कालावधि में समाज के नीतिमूल्यों का पतन होता गया है। यही कारण है कि आज सामाजिक और वैयक्तिक नीतिमूल्यों में क्रांतिकारक बदलाव आया है। उदाहरण के लिए धर्म के नाम पर राजकाज में अपनी धाक जमाने के लिए या समाज में अपना अस्तित्व बनाने के लिए राजकीय नेताओं ने या धर्म के ठेकेदारों ने धर्म की व्याख्या ही बदल डाली।

''स्वधर्म''। गीता लगभग 5000 वर्षो से भी अधिक पूर्व लिखी गई है तब न ईसामसीह का जन्म हुआ था इसलिए उस समय न क्रिश्चियन, न इस्लाम, न बुद्ध और न ही सिक्ख या अन्य कोई, आज के जमाने में, जिन्हें हम धर्म कहते हैं, अस्तित्व में थे। केवल हिन्दू धर्म ही था किन्तु उस समय धर्म की व्याख्या अलग उद्देश्य को सामने रखकर की गई थी।

धर्म यानें कर्तव्य। मजे की बात यह है कि अंग्रेजों का राज्य भारत में होने पर हर शब्द को अंग्रेजी में अनुवादित किया गया लेकिन कुछ-कुछ शब्द ऐसे थे जिन्हें अंग्रेजी में पर्यायी शब्द ही नहीं मिले। जैसे कि ''लाठी'' को शब्द न मिलने से आज भी अंग्रेजी में लाठी शब्द ही है जैसे कि ''लाठीचार्ज''। लड्डू अंग्रेजों को पता ही नहीं इसलिए लड्डू को लड्डू ही कहते हैं। ''पिण्डदान'' यह केवल भारतीय परम्परा का भाग है और उन्हें पता ही नहीं तो उसका पर्यायी शब्द वे कहां से लायेंगे। यही बात 'धर्म' इस शब्द को भी लागू पड़ती है। अपने यहां धर्म का अर्थ कर्तव्य है। अंग्रेजी में धर्म का पर्यायी शब्द नहीं है अंग्रेजी में धर्म का पर्यायी शब्द रिलिजन है। लेकिन रिलिजन का सही अर्थ है: पंथ, संप्रदाय अथवा उपासना पद्धति।

दूसरा - स्वधर्म का अर्थ है गुण या सूर्य का धर्म प्रकाश देना है। पानी का धर्म बहना है। अग्नि का धर्म ताप और प्रकाश है। उसी प्रकार हर व्यक्ति की एक अलग से पहचान, एक खुद की पसन्द है। जिस व्यक्ति की सुप्त इच्छा है कि वह आगे चल के एक अच्छा एथलेट बने, वह उसी क्षेत्र में प्रगति करेगा। जिसकी सुप्त इच्छा है कि वह सर्विस करके उच्च पद पर पहुंचे वह उस दिशा में ही सोचेगा। जिसकी इच्छा हो कि वह बिजनेस करे, वह सर्विस में कभी नहीं जायेगा। अर्थात् हर व्यक्ति का यह स्वधर्म है और यही उसका धर्म है। इसीलिए गीता में कहा है ''स्वधर्म'' का स्वाभिमान होना चाहिए।

भारतीय संस्कृति में एक और महत्वपूर्ण शब्द है ''वर्णाश्रम''।

भारतीय परम्परा में चार वर्ण बताये गये हैं:

1- ब्राह्मण, 2. क्षत्रीय, 3. वैश्य, 4. शूद्र

उसी प्रकार 4 आश्रम बताये गये हैं:

1- ब्रह्मचर्य, 2. गृहस्थाश्रम, 3. वानप्रस्थाश्रम 4. सन्यासाश्रम

यह ''वर्णाश्रम'' एक व्यवस्था शुरूआत के काल से सामाजिक और आध्यात्मिक व्यवस्था तालमेल के साथ चले इसलिए बनाई गई थी, ताकि समाज का कार्य सुचारु रूप से चले वर्णाश्रम याने जाति व्यवस्था नहीं थी। यह तो अपने-अपने कर्तव्य की जिम्मेदारी निभाने के लिए बनाई गई व्यवस्था थी। किन्तु धीरे-धीरे समय के साथ-साथ जन्म से ही उसे जाति का रूप दिया गया और जन्म से ही वह उस जाति का है ऐसा मानना शुरू हुआ। छूत और अछूत की बीमारी ने जन्म लिया, जिसका अतिरेक होने लगा। यहीं से धर्म के नाम पर क्रोध, ईर्ष्या और नफरत का जन्म हुआ।

समय के साथ-साथ अपने निजी स्वार्थ के लिए, समाज में अपना महत्व अलग से बना के रखने के लिए कई उच्चवर्णीय लोगों ने इसकी शाखाएं तथा सैंकड़ों उपशाखाएं बना ली। छूत-अछूत का अभिशाप शुरू हुआ। धर्म शब्द से सही अर्थ का अनर्थ हो गया। लोगों के अज्ञान का फायदा उठाकर, धर्म का गलत अर्थ निकालकर यह हिन्दू संस्कृति में एक अभिषाप बनकर रह गया। आज की जातीय व्यवस्था यह पूर्वजों के पाप का भाग है मानना गलत होगा। आज के राजकारणियों तथा समाज के धर्म ठेकेदारों ने अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए धर्म को जाति नाम दे दिया। और यहीं से धर्म के नाम पर समाज में राग, द्वेष, आपस में नफरत शुरू हुई, जिसका फल हमारी आज की पीढ़ी भोग रही है।

एक बात का ध्यान हमें रखना है कि समय के साथ कई मान्यताएं बदलती हैं। पहले लड़का कुलदीपक माना जाता था इसलिए पुत्र प्राप्ति के लिए पुत्रकामेष्टी यज्ञ किये जाते थे। लेकिन आज हम लड़का या लड़की एक समान मानते हैं। आज 'लिव इन रिलेशनशिप' (शादी किये बिना एकसाथ रहना) को सरकारी मान्यता है, जो कि अपने भारतीय परम्परा के विपरीत है, अपनी संस्कृति के आत्मा पर एक दुखद बिंदु है। अधिकतर देशों में लड़कियां विवाह के पश्चात् पति के घर रहने जाती हैं, वहीं अफ्रीका के कुछ प्रजातियों में लड़के शादी के बाद ससुराल रहने जाते हैं। कहने का तात्पर्य कि देश और काल के साथ मान्यताएं बदलती रहती हैं। समय के साथ हमें चलना होगा।

अपने भूतपूर्व राष्ट्रपति आदरणीय अब्दुल कलाम ने रिलिजन की बहुत ही सुस्पष्ट व्याख्या की है। उन्होंने कहा, ''रिलिजन'' के दो पहलू है। एक है ''धर्मग्रंथ की उपासना'' और दूसरा है ''अध्यात्म यह पहलू हर रिलिजन का एक ही है। हर रिलिजन के अध्यात्म का सार है एक अच्छा इन्सान बनना, एक अच्छा नागरिक बनना, एक अच्छा पड़ोसी बनना और एक अच्छा विद्यार्थी बनना।''

आज यदि धर्म के सही अर्थ को, धर्मग्रंथ के उपासना को और धर्म की आत्मा याने उसके भीतर छिपे अध्यात्म के यथार्थ रूप को हम समझें और समाज के तथाकथित धार्मिक नेता या राजकीय नेता जो समाज में अपने निजी स्वार्थ सिद्धि के लिए, आपस में द्वेष बोकर, धर्म को अधर्म बनाकर, धर्म की आड़ में आपस में लड़ा कर, समाज को विभाजित करके खुद की रोटी सेंकने के मनोदय को हम समझें तो धर्म का सभी झगड़ा खत्म हो जायेगा।

डॉ. हरिप्रसाद सोमाणी-लातूर

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा

सामाजिक समस्या समाधान वक्ता पैनल सदस्य

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

दिनांक 13 जुलाई 2015 को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती ज्योतिजी राठी, प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती पुष्पाजी मोहन्ता एवं अन्य कार्यकारिणी बहनों के साथ 'संजीवनी वृद्धाश्रम' में बुजुर्गों के साथ भजन, प्रार्थना का कार्यक्रम किया। वहां जाकर यह महसूस हुआ कि वे बुजुर्ग हमसे सिर्फ थोड़ा सा प्यार व देखभाल चाहते हैं। छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन ने वृद्धाश्रम में टेबिलें एवं कुर्सियां बनवाकर दिये ताकि वे उस पर बैठकर भोजन कर सकें। आगे भी उन्हें सहयोग देने का आश्वासन दिया।

उषा मोहन्ता–प्रादेशिक मंत्राणी

दिल्ली प्रादेशिक महिला संगठन की त्रैमासिक रिपोर्ट

3 नए क्षेत्रों का गठन – कुल 8 क्षेत्र, नव सत्र डायरेक्ट्री का प्रकाशन, संगठन को रजिस्टर्ड करवाया व पैनकार्ड लिया गया।

सोशल मीडिया के सभी माध्यमों का यथा – फेसबुक पेज, मेल आईडी, व्हाट्सअप ग्रुप, एसएमएस पैकेज द्वारा संस्था का प्रचार–प्रसार, आवश्यक सूचनाएं तथा रिपोर्टिंग का कार्य शुरू कर दिया गया जिससे पेपर वर्क शून्य हो गया।

दिल्ली नगर निगम के चुनाव 2017 में भाजपा द्वारा 3 माहेश्वरी बहनों श्रीमती कंचन समदानी, श्रीमती रेणु जाजू, श्रीमती रीना माहेश्वरी को प्रत्याशी बनाया गया जिन्होंने विजय हासि कर समाज का गौरव बढ़ाया।

प्रदेश सह–संयोजिका द्वारा विवाह योग्य युवक–युवतियों के बायोडाटा संलन का कार्य रा. उत्तरांचल सह–सचिव श्रीमती शर्मिलाजी राठी के नेतृत्व में शुरू हो गया, करीब 100 डाटा कलेक्ट हो गये हैं।

महिला पत्रिका के लिए नए सदस्य बनाये गये।

प्रदेश के किसी क्षेत्र में गवरल माता का बिन्दोरा राजस्थानी मेले के रूप में और कहीं सिंजारा के साथ धूमधाम से मनाया गया।

हिन्दू नववर्ष के आगमन पर भगवान जगन्नाथ रथयात्रा महोत्सव का आयोजन किया गया।

10 अप्रैल 2017 को रा. संगठन मंत्री श्रीमती मंजूजी बांगड़ व रा. सह–सचिव श्रीमती शर्मिलाजी राठी का शानदार स्वागत किया गया।

दीदी ने बहनों को संगठन की विस्तृत जानकारी दी।

उत्तरी क्षेत्र की 2 बहुओं ने मिलकर मोबाइल एप के बारे में जानकारी दी कि फोन द्वारा किस तरह कठिन कार्य भी आसानी से कर सकते हैं।

उपरोक्त दिल्ली प्रदेश के सभी कार्यमों में कोई न कोई विशेष सामाजिक संदेश समाज को दिया गया यथा–प्रकृति संवर्धन, जल बचाओ, अन्न बचाओ और फिजूलखर्ची पर रोक।

पश्चिमी क्षेत्र की अध्यक्ष श्रीमती सरोज दम्मानी व सचिव श्रीमती के नेतृत्व में **'खुशियों का खजाना'** कार्यक्रम आयोजित किया गया। राजेश्वरीजी मोदी के खुशियों का खजाना ने सकारात्मक ऊर्जा से जीवन की दिशा व दशा बदल दी। व्यास पीठ से उन्होंने नारायण शास्त्र के 5 अध्यायों के माध्यम से जीवन जीने के तरीके, वाणी के दोष, कर्मों का फल कैसे हमें 1 से 11 और कण से मण बन कर वापस मिलतस है, उदाहरण दे कर सब की आंखें खोल दी। बच्चों की परवरिश कैसे करें गलत दिनचर्या का असर हर बात को इतनी सहज सरल शैली में प्रस्तुत किया कि लोगों को लगा कि उनके ही जीवन की घटनाएं घटित हो रही हैं। 1500 लोगों ने अपलक 3 घंटे इस सत्र की खुशियों को बटोरने का प्रयास किया। राम–राम की माला के साथ नारायण हर पल हर क्षण हमारे साथ हैं। हर परिस्थिति, वातावरण, समय कुंडली व्यक्ति हमारे अनुकूल कैसे हो इसका जीवन मंत्र दिया। इस तरह पश्चिमी दिल्ली के लोगों ने ऐसा अद्भुत ओजस्वी सहज सत्र पहली बार सुना। यह सत्र अविस्मरणीय है।

मंच की शोभा बढ़ाई संगठन मंत्री मंजूजी बांगड़, उत्तरांचल की सह–सचिव शर्मिलाजी राठी, परवालजी, श्यामाजी बिहानी, प्रतिभा श्यामजी जाजू, आई.टी. कमिश्नर चंदन पुगलिया, प्रदेश अध्यक्ष किरनजी लड्ढा एवं इंदु लड्ढा ने स्वादिष्ट भोजन, टीम वर्क, समय की पाबंदी सब कुछ व्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुआ।

दिल्ली में रक्तदान शिविर

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के सभापति श्री श्यामजी सोनी के सानिध्य में 22 अप्रैल 2017 को दिल्ली प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन के साउथ जोन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर जोन

अध्यक्ष श्रीमती वीणाजी जाजू, सचिव श्रीमती बेलाजी सारडा व साउथ जोन की टीम के अथक प्रयासों से सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें 307 लोगों ने रक्तदान किया। इसमें श्रीमती प्रतिभा श्यामजी जाजू राष्ट्रीय सहसचिव, शर्मिला राठी दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष, किरण लड्ढा सचिव श्यामा बागड़िया के साथ दिल्ली के आठों जोन अध्यक्ष, सचिव एवं प्रदेश के बहुत से सदस्यों ने उपस्थिति देकर कार्यक्रम को सफल बनाया। विशेष सहयोग श्री योगेशजी जाजू का रहा, जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

किरण लड्ढा

श्यामा भांगड़िया

पश्चिम बंगाल प्रदेश की माहे. महिला संगठन की प्रादेशिक रिपोर्ट

पश्चिम बंगाल प्रदेश की अध्यक्ष श्रीमती नीलम भट्टड़ दुर्गापुर, सचिव श्रीमती कुसुम मल पुरुलिया एवं कार्यसमिति की श्रीमती रेखा लखोटिया दुर्गापुर ने बताया कि प्रदेश की कार्यसमिति की बैठक दुर्गापुर में अतिथि श्रीमती शोभाजी सादानी, श्रीमती सरलाजी काबरा, श्रीमती जमनाजी हेड़ा के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुई। 40 सदस्य उपस्थित थे। इसके अलावा पूरे प्रदेश में विभिन्न समितियों के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

सुश्रिता समिति : कुकिंग ब्यूटी टिप्स और न्यूमेरोलॉजी तीनों ग्रुप को जिला व स्थानीय स्तर पर बराबर चलाया जा रहा है। स्थानीय स्तर पर इस प्रयास को बहुत सराहा जा रहा है। दुर्गापुर एवं पुरुलिया में केक, सन्देश एवं शरबत क्लासेस ली गई है। सिक्किम फूड फेस्टिवल द्वारा गंगटोक में मास्टर शेफ कम्पटिशन हुआ, जिसमें पुष्पा लखोटिया प्रथम हुई।

सुगंधा समिति : दुर्गापुर द्वारा मकर संक्रांति के अवसर पर विवेकानंद स्कूल में 150 बच्चों, शिक्षकों और स्टाफ के साथ सदस्यों ने भी खिचड़ी एवं मिठाई खाई। उन्हें स्वच्छता का महत्व बताया गया।

पुरुलिया में अनाथ बच्चों और गंगटोक में ओल्ड एज होम में खाने–पीने की चीज दी गई। सिलीगुड़ी शाखा ने अनाथालय में एक म्यूजिक सिस्टम डोनेट किया। सिलीगुड़ी शाखा ने अमृतकुंड योजना के अंतर्गत कुएं का निर्माण करवाया।

संचारिका समिति : दुर्गापुर में मीटिंग में बहनों को फेसबुक अकाउंट, ईमेल अकाउंट बनाना सिखाया। पुरुलिया में बैंक ट्रांजक्शन एवं कैशलेस पेमेंट की ट्रेनिंग दी गई। रामपुरहाट छोटा सा गांव है, वहां नई समिति का गठन हुआ। वहां

सी.एस. गुंजन डागा को सभी को ट्रेनिंग देने की जिम्मेदारी दी गई।

सुरभि समिति : सभी शाखाओं ने तीज का सिंधारा, दिवाली मिलन, शिवरात्रि उत्सव धूमधाम से मनाया। धुपगुड़ी शाखा ने मंदिर में दीप जलाये। शरद पूर्णिमा पर पुरुलिया ने डांडिया रास की। नलहाटी में गणगौर उत्सव जोर-शोर से मनाया गया।

सुकीर्ति समिति : टोटल वेलफेयर एन्त्रप्रेन्योर आर्गनाइजेशन जो कि यू.एस.एस. एफिलिएटेड है। 80 देशों में फैली है। इस बार ई.पी.आर.एम. को बढ़ावा दे रही है। दुर्गापुर से पूजा भट्टड़ को सेलेक्ट किया है। उनको यू.एस. सरकार की तरफ से 6 महीने की उनके वेंचर के लिए मेंटरशिप मिलेगी।

सुरम्या समिति : पुरुलिया, सिलीगुड़ी, गंगटोक कई जगहों पर पिकनिक का प्रोग्राम आयोजित किया गया। क्विज खेलाने के लिए जिला व स्थानीय स्तर पर ग्रुप बनाये जा रहे हैं।

सौष्ठा समिति : पुरुलिया, सिलीगुड़ी में आई चेकअप कैम्प लगाये गए। जलपाईगुड़ी में एक ग्रामीण महिला का आँख का ऑपरेशन समिति द्वारा कराया गया। पुरुलिया ने अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर स्कूल में स्पोर्ट्स ऑर्गनाइज किया। दुर्गापुर ने डार्ट क्लब के साथ मैराथन दौड़ आयोजित की, जिसमें अशोक चांडक को द्वितीय पुरस्कार मिला।

सुलेखा समिति : राष्ट्रीय स्तर पर निबंध प्रतियोगिता में सभी जगह से 15 निबंध आये, जिसमें बोलपुर से सरोज मालपानी प्रथम, जयश्री शारदा पुरुलिया से द्वितीय, प्रिया डागा दुर्गापुर से एवं ममता मालपानी सिलीगुड़ी से तृतीय स्थान पर रहीं। सिलीगुड़ी सेक्रेटरी भारतीय बियानी की कविता दो बार जनपथ पत्रिका में प्रकाशित हुई।

सुचिता समिति : दुर्गापुर में आर्ट ऑफ लिविंग के साथ मिलकर सहज समाधि मेडिटेशन कराया गया। हीलिंग की 2 घंटे वर्कशॉप ली गई।

संवर्णा समिति : प्रदेश में बायोडाटा कलेक्शन का काम कराया जा रहा है।

सुषमा समिति : बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के अंतर्गत प्रतियोगिता में भाग लिया। गणतंत्र दिवस स्कूल के बच्चों के साथ मिलकर मनाया।

विशिष्ट एवं प्रमुख- भ्रमण एवं गठन-

श्रीमती शोभाजी, श्रीमती सरलाजी एवं श्रीमती मंजूजी द्वारा जलपाईगुड़ी शाखा का गठन। श्रीमती नीलमजी एवं श्रीमती सरोज मालपानी द्वारा मालदह भ्रमण एवं पश्चिम बंगाल प्रादेशिक सभा की प्रथम कार्यसमिति मीटिंग अटेंड की।

पश्चिमी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन की त्रैमासिक रिपोर्ट

राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक 'संकल्प'

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी म.सं. के एकादश सत्र की दो दिवसीय प्रथम मीटिंग 'सकल्प' का आयोजन पश्चिमी म.प्र. महिला संगठन द्वारा संस्कृति, संस्कार, सभ्यता का संगम लिये, बाबा महाकालेश्वर की नगरी अवंतिका, कृष्ण सुदामा की शिक्षा स्थली उज्जैयनी, राजा विक्रमादित्य के राजवंश के आतिथ्य सत्कार का वैभव लिये उज्जैन नगरी में, उज्जैन जिला माहेश्वरी म.सं. के आतिथ्य में महाकाल मंदिर के समीप स्थित माधव भक्त निवास में संपन्न हुआ।

माहेश्वरी महिला

नई चुनौतियों, नए संकल्पों के साथ कार्य करने की प्रतिबद्धता एवं नव निर्वाचित नेतृत्व को प्रवाह प्रदान करने का 'संकल्प' लिये कार्यसमिति की प्रथम बैठक का प्रथम सत्र दिनांक 8 अप्रैल प्रात: 10:30 बजे आरंभ हुआ। मालवा संस्कृति को दर्शाती हस्त निर्मित कलाकृतियों से सुसज्जित मंचीय कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान उमा महेश की वंदना से हुआ। स्वर दिया रश्मि बजाज, मंगला बांगड़, लेखा लड्ढा, लता भण्डारी एवं सरोज परवाल ने।

स्वागत उद्बोधन : प्रदेश अध्यक्ष अरूणाजी बाहेती ने सभी आगंतुक राष्ट्रीय पदाधिकारी, पूर्वाध्यक्ष एवं विभिन्न प्रांतों से पधारी कार्यसमिति सदस्य व समिति संयोजिका बहनों का स्वागत किया। स्वागत अध्यक्ष श्रीमती सरस्वतीजी सारडा ने सभी बहनों का अभिवादन किया। स्वागत मंत्री उषाजी सोढानी ने बेटा एवं बेटी को उच्च शिक्षा के साथ सुसंस्कृत करने का विनम्र निवेदन किया। जिला अध्यक्ष कृषाजी जाजू ने मालवी भाषा की सुन्दर कविता द्वारा सभी मंचासीन एवं आगंतुक बहनों का स्वागत किया।

पुष्पों से राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पनाजी गगरानी का स्वागत किया अरूणाजी बाहेती, सरस्वतीजी सारडा ने। राष्ट्रीय महामंत्री आशाजी माहेश्वरी का स्वागत किया प्रदेश सचिव वीणा सोमानी एवं स्वागत मंत्री उषा सोढानी ने। राष्ट्रीय पदाधिकारियों कौशल्याजी गट्टानी, मंजूजी बांगड़, ज्योतिजी राठी, शैलाजी कलंत्री का स्वागत निर्मलाजी बाहेती, कृष्णाजी जाजू, मंजूजी भलिका, दीपालीजी सोमानी, मंगलाजी सिंगी एवं पुष्पाजी कोठारी द्वारा किया गया।

प्रारंभिक स्वागत के पश्चात् राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक प्रारंभ हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपनी कार्ययोजना पर प्रकाश डाला। सभी बहनों से समर्पित भाव से अपने दायित्व को निभाने का अनुरोध किया। आपने कहा कि पद व कद दोनों से महत्वपूर्ण है कार्य।

एकादश सत्र की सम्पूर्ण कार्य योजना 11 समितियों के माध्यम से पावर प्रेजेन्टेशन द्वारा बतलाई गई।

स्थाई प्रकल्प (1) माहेश्वरी महिला (2) अ.भा. महिला सेवा ट्रस्ट, (3) एम.एम.यू. ब्रांड की जानकारी समिति पदाधिकारियों द्वारा दी गई।

रिपोर्ट वाचन : सभी प्रदेश अध्यक्ष द्वारा प्रदेश के विभिन्न जिलों में किये गये कार्यो का विवरण रिपोर्ट के माध्यम से वाचन किया गया। मस्ती की पाठशाला के अन्तर्गत सभी का आपस में परिचय हुआ। बेटी बचाओ पर एकल अभिनय कर अभिनव प्रस्तुति दी गई। झाला एवं अंताक्षरी का भी आयोजन हुआ।

द्वितीय सत्र : ''जल ही अमृत है'', नदी बचाओ के अंतर्गत चुंदड़ी मनोरथ, क्षिप्रा आरती एवं क्षिप्रा महात्म्य पर आंचलिक भजन प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि श्री शैलेन्द्रजी पाराशर एवं कार्यक्रम अध्यक्ष श्री पारसजी जैन (केबिनेट ऊर्जा मंत्री) के सानिध्य में कार्यक्रम का शुभारंभ क्षिप्रा पूजन से हुआ। इस अवसर पर श्री जयप्रकाश राठी, उद्योगपति रोहितजी

सोमानी, पुष्कर जी बाहेती, मनोरमाजी लड्ढा, लताजी बाहेती, गीताजी मूंदड़ा, विमलाजी साबू, शोभाजी सादानी एवं शहर के गणमान्य नागरिक व विभिन्न प्रदेशों से आई लगभग 300 महिलाएं उपस्थित थीं।

सभी महिलाओं ने लाल चुनरी पहनकर क्षिप्रा मैया की मंत्रोचार के साथ पूजा अर्चना की। जिस प्रकार भाई अपनी बहन को चुंदड़ी ओढ़ाकर रक्षा का वचन देता है, उसी प्रकार

क्षिप्रा मैया को चुंदड़ ओढ़ाकर उसकी स्वच्छता एवं संरक्षण का संकल्प महिला संगठन द्वारा लिया गया। तत्पश्चात् सामूहिक रूप से सबने क्षिप्रा की आरती की। यह अत्यन्त मनोहारी दृश्य था।

भजन प्रतियोगिता का प्रारंभ 7:30 बजें हुआ। साथ ही घाट पर मंच के समीप ''जल ही जीवन'', ''नदी बचाओ'' पर आधारित पोस्टर लगाये गये थे।

पूर्वांचल, दक्षिणांचल, उत्तरांचल, मध्यांचल एवं पश्चिमांचल की भजन प्रस्तुतियां क्रमश: चिट के आधार पर हुई। सभी प्रस्तुति इतनी सुंदर सुरमई थी कि सभी भाव-विभोर हो गये।

भजन प्रस्तुति के पश्चात् मालवा संस्कृति की 'संजा' पर आधारित नृत्य प्रस्तुति उज्जैन के कलाकारों द्वारा दी गई, जिसका निर्देशन श्रीमती चेतना पण्ड्या द्वारा किया गया।

कल्पनाजी की कल्पनाएं व आशाजी के विश्वास के साथ एकादश सत्र की प्रथम कार्यसमिति बैठक का प्रथम चरण महाकालेश्वर व माँ क्षिप्रा के सानिध्य मे पूर्ण हुआ।

उद्घाटन सत्र में नए लक्ष्य, नया जोश, नए आयाम, नए क्षितिज, नई ऊँचाइयां, नई संभावनाएं, नई चुनौतियों के लिए, उन्हीं मूल्यों, सिद्धांतों और संस्कारों के साथ शिक्षा, स्वावलम्बन, नारी सशक्तिकरण का संकल्प भगवान महाकालेश्वर के समक्ष उनका पूजन अर्चन कर लेने के पश्चात्, राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पनाजी गगरानी ने अपनी टीम के साथ कोटि तीर्थ कुंड पर लिया। यहीं से भक्त निवास तक अन्नुजी बाहेती के निर्देशन में शोभा-यात्रा निकाली गई, जहां स्थानीय समाजजन द्वारा जिला संगठन, पश्चिमांचल महिला संगठन द्वारा भावभीना स्वागत दुपट्टे ओढ़ाकर एवं रूद्राक्ष की माला पहनाकर किया गया।

उद्घाटन सत्र में आकर्षक प्रस्तुति

माहेश्वरी महिला

राजाधिराज महाकालेश्वर की स्तुति उज्जैन के कलाकारों द्वारा की गई। नारी सशक्तिकरण पर आधारित हृदयस्पर्शी मार्मिक नृत्य की प्रस्तुति इन्दौर जिला के कलाकारों द्वारा शैली माहेश्वरी के निर्देशन में दी गई, जिसके द्वारा यह संदेश दिया गया कि पूर्व में नारी को 'अबला' बन अत्याचार सहन करना पड़ा, अब वह 'सबला' बन सदाचार फैलायेगी।

''अतिथि दैवो भव:'' परम्परा का निर्वहन करते हुए उन्हें मंचासीन करने हेतु कार्यक्रम संचालन कर रही नम्रता बियाणी एवं विभा राठी ने आयोजक संस्था अध्यक्ष एवं सचिव से अनुरोध किया। स्वागत अध्यक्ष, स्वागत मंत्री, जिलाध्यक्ष, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष निर्मला बाहेती एवं कार्यक्रम संयोजक द्वय ने पुष्पगुच्छ द्वारा अतिथियों का स्वागत किया। सभागृह में उपस्थित अग्रिम पंक्ति में विराजित पूर्व

राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं शहर के गणमान्य महानुभावों का स्वागत कार्यक्रम मार्गदर्शक गीताजी मूंदड़ा एवं शोभाजी माहेश्वरी, ललिताजी मालपानी, उर्मिलाजी झंवर, मंजूजी भलिका व हेमाजी मोहता ने किया।

● श्रीमती सरस्वतीजी सारडा ने स्वागत उद्बोधन में राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पनाजी एवं उनकी टीम को शुभकामनाएं देते हुए सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया।

● प्रदेश अध्यक्ष अरूणाजी बाहेती ने सभी सहयोगियों का वरिष्ठ पदाधिकारियों के मार्गदर्शन व सहयोग की प्रशंसा करते हुए स्वयं को गौरवान्वित माना कि यह स्वर्णिम अवसर उन्हें व उनकी टीम को मिला।

● राष्ट्रीय महामंत्री आशाजी माहेश्वरी ने सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत करते हुए जानकारी दी कि वेबसाइट पर 27 प्रदेशों की कार्ययोजना अपलोड हुई है। 100 प्रतिशत परिणाम की खुशी जाहिर की। इसमें आपने 30 प्रतिशत युवाओं की भागीदारी होने पर प्रसन्नता जाहिर की। आपने आव्हान किया कि जो भी करना है अपने आप पर व ईश्वर पर विश्वास रख कर करें। वर्तमान में जीओ और आज से नहीं, अगले ही क्षण से आरंभ करो। स्वागत गीत रश्मि बजाज ने प्रस्तुत किया।

श्री रामअवतारजी जाजू ने नई कार्यसमिति को उनके कार्यकाल में उत्कृष्ट कार्य हेतु शुभकामनाएं दी।

राष्ट्रीय महासभा सभापति श्री श्यामजी सोनी ने कहा कि अगर समाज में क्रांति या परिवर्तन लाना है, तो केवल बहनें ही ला सकती हैं।

बैनर प्रेजेन्टेशन : विभिन्न 11 समितियों के समिति प्रभारी, संयोजिका एवं सह-संयोजिका द्वारा अपनी-अपनी समिति के कार्य बैनर प्रेजेन्टेशन द्वारा बताये गये।

आयोजक संस्था सचिव वीणा सोमानी द्वारा राष्ट्रीय संगठन, अतिथिगण, जिला संगठन की कार्यकर्ता बहनों, दानदाताओं, पत्रकार बंधु को आभार एवं धन्यवाद प्रेषित किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को राष्ट्रीय संगठन द्वारा पुरस्कार दिये गये।

टेलीफोन डायरेक्टरी संचारिका एवं वेबसाइट का उद्घाटन भी अतिथियों द्वारा इस अवसर पर करवाया गया।

इन्दौर माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा गणगौर के उपलक्ष्य में रंगारंग बाना एवं सेल का आयोजन किया गया, सभी बहनें सोलह श्रृंगार करके आई।इन्दौर जिला ग्रामीण में बहनों द्वारा फाग उत्सव मनाया गया।देवास महिला संगठन

द्वारा गणगौर, बाना एवं मेले का आयोजन किया गया।

उज्जैन जिला महिला संगठन द्वारा फाग उत्सव फूलों के साथ मनाया गया और अलग–अलग ग्रुप बनाकर फाग के गीतों पर प्रतियोगिता आयोजित की गई।

मन्दसौर जिला महिला संगठन द्वारा फाग उत्सव फूलों की होली खेलकर मनाया गया। सास–बहू पर प्रतियोगिता आयोजित की गई एवं कुपोषित बच्चों को आंगनवाड़ी में भोजन करवाया गया।

नीमच व मनासा में जिला महिला संगठन द्वारा फाग उत्सव मनाया गया एवं सुन्दर माण्ड का पाठ करवाया गया।

खण्डवा जिला महिला संगठन द्वारा होली के भजनो के साथ फूलों से होली खेलकर फाग उत्सव मनाया गया तथा वरिष्ठ बहनों का सम्मान भी किया गया।

बड़वानी जिला महिला संगठन द्वारा फाग उत्सव, गणगौर मेला, होली मिलन के आयोजन के साथ ही 40 दिवसीय समर कैम्प भी लगाया गया।

खरगोन जिला महिला संगठन द्वारा गणगौर पर दूल्हा–दुल्हन बनाकर फूल–पाती खेली गई, साथ ही गरीब बस्ती में वस्त्रों का वितरण किया गया।

बुरहानपुर जिला महिला संगठन द्वारा होली मिलन मेले का आयोजन किया गया। राजगढ़ जिले में भी बहनों द्वारा गणगौर उत्सव मनाया गया। अलीराजपुर जिले में भी बहनों द्वारा भजन प्रतियोगिता आयोजित की गई।

शाजापुर जिले में भी बहनों द्वारा होली मिलन एवं फाग उत्सव मनाया गया। वरंगल में सोलह दिवसीय गणगौर उत्सव का समापन धूमधाम से हुआ। महाप्रसाद की व्यवस्था माहेश्वरी गार्डन में की गई थी। गणगौर के गीतों का कार्यक्रम, खेलकूद एवं सामूहिक नृत्य आदि का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विजेताओं को पुरस्कार दिये गये। इस अवसर पर 700 राहगीरों के लिए अन्नदान का कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। मंत्री मीना लाहोटी व अध्यक्ष चंदादेवी सोनी ने आभार माना।

सनावद में स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गणगौर पर्व एवं सिंजारा का आयोजन सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य तंबोला, पानपूजा डेकोरेशन प्रतियोगिता के साथ किया गया। समस्त पदाधिकारियों द्वारा गणगौर नृत्य प्रस्तुत किया गया। खरगोन जिलाध्यक्ष स्मिता बियाणी आदि अतिथि के रूप में मौजूद थीं। इस कार्यक्रम में प्रमिला मंत्री, वंदना अजमेरा, रश्मि राठी एवं ललिता मंत्री आदि का विशेष सहयोग रहा। सभी जिलों में होली एवं फाग उत्सव अति उत्साह से मनाये गये।

वीणा सोमानी, अरूणा बाहेती

पूर्वी उत्तरप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन

पूर्वी उत्तरप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन अंचल उत्तरांचल की अध्यक्ष श्रीमती शशि नेवर वाराणसी एवं सचिव श्रीमती उषा झंवर लखनऊ एवं कार्यसमिति की श्रीमती राधा जाजू लखनऊ के नेतृत्व में कार्यसमिति व कार्यकारिणी की बैठक लखनऊ, वाराणसी, भदोही में आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि मंजू बांगड़जी, कांता गगरानीजी, सुभाष बहेड़ियाजी सांसद भीलवाड़ा, अजय काबराजी, संगठन मंत्री (अ.भा.मा.महासभा) उपस्थित रहे। सभी के द्वारा विभिन्न समितियों के अन्तर्गत अनेक कार्य संपादित हुए।

सुश्रीता : वाराणसी में एच.डी.एफ.सी. बैंक के अधिकारी द्वारा कैशलेस पर कार्यशाला। ट्रांसगोमती मा.म. संगठन, **लखनऊ द्वारा दो प्रतियोगिता** – मीठे चावल बनाना, गुझिया बनाना।

सुगन्धा : मकर संक्रांति पर वाराणसी में हैप्पी स्कूल में 200 बच्चों को स्वेटर, वृद्ध आश्रम में नुक्कड़ नाटक व भोजन बनाकर खिलाया गया।

सुलेखा : राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता में प्रदेश से 146 निबंध आये, प्रदेश में सभी को पुरस्कार दिया गया।

सुरम्या : इलाहाबाद, लखनऊ, वाराणसी में पिकनिक का आयोजन हुआ।

सुरभि : मकर संक्रांति, शिवरात्रि, होली पर रंगारंग कार्यक्रम एवं भदोही, मिर्जापुर का संयुक्त होली मिलन व फाग उत्सव मनाया गया।

संजोग : लखनऊ मा.म. मंडल में श्रीमती विमलाजी के द्वारा बायोडाटा फाइल बनाई गई एवं रेखा सोमानीजी ने पूरे भारतवर्ष में एक बायोडाटा बनाया।

सुबोध : वाराणसी में एक पुस्तिका सखी संगम का विमोचन हुआ।

सुगन्धा : गांव के अपंग बच्चों को कैंडिल मेकिंग मशीन वाराणसी मंडल द्वारा दी गई।

पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन का सफरनामा

अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा झंवर, सचिव श्रीमती अनिताजी जांवधिया एवं कार्यसमिति सदस्य श्रीमती मंजरीजी छापरवाल के नेतृत्व में सभी समितियों के अन्तर्गत सम्पन्न कार्यमों का संक्षिप्त ब्योरा –

(1) सुश्रीता (महिला विकास): भोपाल मा. महिला जिला संगठन के तत्वाधान में सुनीताजी बाहेती सी.ए. द्वारा वसीयत की जानकारी, शिवपुरी में वसीयत एवं महिला अधिकारों की जानकारी, भोपाल में गुझिया बनाने, पैकिंग करने की कार्यशाला, गुना में भी अनुपयोगी सामानों के द्वारा उपयोगी वस्तुएं बनाने की कार्यशाला आयोजित की गई। जावर जिला (सीहोर) की दो महिलाओं को व्यवसाय हेतु आर्थिक लाभ दिलाया गया, इसी के साथ हरदा में भी एक बालिका को पढ़ाई हेतु महिला ट्रस्ट द्वारा लोन दिया गया।

(2) सुगंधा (ग्राम विकास): अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की महामंत्राणी श्रीमती आशाजी माहेश्वरी, प्रदेश अध्यक्ष प्रतिभाजी झंवर, मधुजी बाहेती ने शिवपुरी एवं नरवर जिलों में जाकर संगठन का महत्व श्रृंखलाबद्ध संगठन की जानकारी एवं विभिन्न ट्रस्टों की जानकारी दी। भोपाल महिला संगठन द्वारा अपना घर वृद्धाश्रम भोपाल में काफी मात्रा में उपयोगी कपड़े, खाद्य सामग्री, बर्तन, स्वेटर, बेडशीट आदि वितरित की। हरदा महिला मंडल ने भी गांवों की गरीब महिलाओं को कपड़े, साड़ियां तथा शिशुओं को बेबीकिट प्रदान की। हरदा एवं सीहोर में रक्तदान किया।

(3) सुलेखा: पूर्वी म.प्र. महिला संगठन द्वारा 'महिलाओं का शिक्षा का स्वरूप कैसा हो' विषय पर सभी स्थानीय संगठन जिला संगठन द्वारा प्रतियोगिता आयोजित करवाई गई और विजेताओं को चुना गया।

(4) संचारिका (प्रचार–प्रसार): मेल आईडी अकाउंट बनाकर वाट्सअप ग्रुप बनाकर प्रदेश की छोटी से छोटी इकाई को मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास, वाट्सअप द्वारा विचारों का आदान–प्रदान एवं सभी सूचनाओं का त्वरित आदान–प्रदान की जानकारियां।

(5)सौष्ठा (स्वास्थ्य): भोपाल, पिपरिया, सागर, ग्वालियर, हरदा तथा अन्य शहरों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा की गई। हरदा में डॉ. हेड़ा ने महिलाओं की बीमारियों तक उनसे बचने के उपायों की जानकारी दी। पिपरिया में शिखाजी माहेश्वरी ने योग शिविर लगाया। कटनी में 50वां नेत्र शिविर लगाया गया। सतना में रक्तदान शिविर लगाया गया। पिपरिया में सुजोक, कलर थेरेपी एवं एक्युप्रेशर थेरेपी का शिविर लगाया गया।

(6) सुचिता: पूरे प्रदेश में होली व फाग उत्सव की धूम। कहीं टेपा सम्मेलन तो कहीं फाग गीत प्रतियोगिता, कहीं हास्य कविता सम्मेलन तो कहीं होली नृत्य प्रतियोगिता, कहीं फूलों से होली खेलकर पानी बचाओ का संदेश दिया तो कहीं बसंतोत्सव मनाया गया। हरदा में छोटे बच्चों ने होली के महत्व को समझाते हुए एक नाटिका प्रस्तुत की। विदिशा में एड्स पीड़ित बच्चों के साथ होली खेली एवं रंगबिरंगी पिचकारी सभी बच्चों को भेंट की। ग्वालियर में 'संतरंगी संध्या' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

(7) सुरभि: अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में सभी शहरों में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे गये। भोपाल, सीहोर, गुना, पिपरिया, ग्वालियर आदि सभी जगह रंगारंग कार्यक्रम सम्पन्न। प्रदेश अध्यक्ष प्रतिभाजी झंवर द्वारा किश्ती योजना प्रदेश के लिए ली गई, जिससे कि दो पीढ़ियों का दो तरह की सोच रखने वालों का आपसी तालमेल हो सके। भोपाल एवं हरदा में भी दो पीढ़ियों का समागम किश्ती का अभिनव आयोजन किया गया। ग्वालियर से प्रियदर्शनीजी नागोरी द्वारा दूरदर्शन पर परिवार पर एक परिचर्चा का प्रसारण किया गया।

(8) सुकीर्ति: ग्वालियर में प्रान्तीय संरक्षक श्रीमती मनोरमाजी लड्ढा को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर खेल एवं युवा कल्याण विभाग (म.प्र. शासन) द्वारा सम्मानित किया गया। इसी श्रृंखला में राजनीतिक महिलाओं एवं डॉ. महिलाओं का सम्मान पिपरिया एवं हरदा में सम्पन्न हुआ। गाडरवारा-शिवपुरी में भी बुजुर्ग सम्मानीय लोगों का सम्मान किया गया। भोपाल में विविध विधाओं में पारंगत महिलाओं को नवरत्न सम्मान से विभूषित किया गया। सीहोर में भी प्रतिभाजी झंवर को नगर पालिका अध्यक्ष द्वारा सम्मानित किया गया। ग्वालियर महिला संगठन के 53 वर्ष पूर्ण होने पर सभी पूर्व अध्यक्ष को सम्मानित किया गया। संस्था की प्रथम सचिव श्रीमती मनोरमाजी लड्ढा को 'लाइफ टाइम अचीवमेन्ट' से सम्मानित किया गया।

(9) सुरम्या: मध्यक्षेत्रीय पूर्व प्रादेशिक महिला संगठन द्वारा भोपाल में केरवा डेम पर म.प्र. टूरिज्म के साथ मिलकर एक एडवेंचर किया गया। इसी तरह हरदा में भी सभी महिलाओं को 'तिलक सिंदूर'' पिकनिक का आयोजन किया गया।

(10) संवरणा: प्रान्तीय संवरणा समिति की संयोजिका श्रीमती रेखाजी लड्ढा शिवपुरी विवाह योग्य बच्चों के लगभग 1200 बायोडाटा एकत्रित कर उचित जीवनसाथी ढूंढने में अपना योगदान दे रही हैं, इतने कम समय में इतने बायोडाटा एकत्र करना बहुत ही प्रशंसनीय कार्य है। कटनी में भी एक कन्या का विवाह महिला मंडल द्वारा करवाया गया।

(11) सुषमा: प्रादेशिक संगठन द्वारा एक पतंग बनाओ तथा 26 जनवरी के उपलक्ष्य में देशभक्ति स्लोगन लिखो प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें मकरसंक्रांति पर सभी स्थानीय व जिला स्तर पर आयोजित की गई। तत्पश्चात् गुना मीटिंग में लगभग 40 पतंगों का प्रदर्शन किया गया तथा तीन विजेता घोषित किये गये। प्रदेश स्तर पर ही 'बेटी बचाओ बेटी बढ़ाओ' पोस्टर एवं स्लोगन

लिखो प्रतियोगिता सभी शहरों में आयोजित की गई।

(12) माहेश्वरी पत्रिका: माहेश्वरी पत्रिका के नए सदस्य बनाने का क्रम जारी है। पत्रिका के सदस्य, जिनके पते बदल गये हैं उनकी जानकारी समय पर उपलब्ध हो रही है या नहीं, इस पर तीव्र गति से कार्य जारी।

(13) महिला सेवा ट्रस्ट:- महिला सेवा ट्रस्ट की सचिव द्वारा ट्रस्ट की जानकारी, जरूरतमंदों को ऋण तथा गुना मीटिंग में फार्म वितरण।

(14) विशेष कार्यक्रम:- प्रदेश द्वारा मीटिंग की नियमावली बनाई गई, जिसमें माला, मोमेन्टो प्रतिबन्धित किये गये।

विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की प्रथम कार्यसमिति सभा-सत्र संकल्पना का सफलता पूर्वक आयोजन

विदर्भ प्रादेशिक महिला संगठन की प्रथम कार्यसमिति सभा 'सत्र संकल्पना' का आयोजन होटल राधे इन में, विदर्भ अध्यक्षा श्रीमती उषाजी करवा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती पद्माजी मूंदड़ा, पूर्व विदर्भ अध्यक्षा डॉ. सुधाजी राठी, डॉ. ताराजी माहेश्वरी, श्रीमती आशाजी लड्ढा, माहेश्वरी महिला पत्रिका की उपाध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी परतानी, विदर्भ कोषाध्यक्षा शीलाजी टावरी, उपाध्यक्षा सरिताजी सोनी, सहसचिव प्रेमाजी बियाणी मंचासीन थीं।

सर्वप्रथम सभी मान्यवरों द्वारा आराध्यदेव भगवान महेश का जयकारा लगाकर प्रथम कार्यसमिति सभा प्रारम्भ की गई।

कार्यक्रम अध्यक्षा श्रीमती उषाजी करवा द्वारा 'सत्र संकल्पना' के तहत मार्च 2017 से 2018 तक की कार्ययोजनाओं की जानकारी सदन को दी एवं उन प्रकल्पों को कार्यान्वित करने के लिए सभी पदाधिकारियों, समिति संयोजिकाओं एवं जिला अध्यक्षों को दिशा निर्देश दिये। सालभर तक के नियोजित कार्यक्रमों को नियोजित करने की जिम्मेदारी वर्धा, भंडारा, नागपुर एवं चन्द्रपुर जिलों को देने की घोषणा की गई, जिसे उपस्थित जिला अध्यक्षों ने स्वीकृति प्रदान की। आने वाली महेश नवमी एवं पूरे सालभर 'पारिवारिक समरसता' पर सभी जिलों, तहसील एवं ग्रामीण क्षेत्रों में टॉक शो, नाटिका मंचन एवं उद्बोधन के लिए सभी को प्रेरित किया। इस सालभर के सत्र के लिए विभिन्न अवाईस की घोषणा की।

इस अवसर पर पद्माजी मूंदड़ा ने अपने आशीर्वचन प्रेषित किये। प्रकल्प प्रमुख श्रीमती आशा लड्ढा ने आगामी प्रकल्पों की विस्तृत जानकारी दी तथा 11 समितियों की कार्यप्रणाली निर्देशित की एवं 2017-2018 में सौष्ठा, सुकीर्ति, सुश्रीता सुगंधा एवं सुरभि समिति के प्रकल्पों को मुख्य रुप से प्राधान्य दे, विदर्भ प्रदेश की मुख पत्रिका 'नारी संदेश' की संपादिका डॉ. ताराजी माहेश्वरी ने अपने पद की जिम्मेदारी संभाली एवं समिति संयोजिकाओं व जिलाध्यक्षों को सटीक रिपोर्टिंग के लिए अवार्ड घोषित किया। डॉ. सुधाजी राठी ने प्रभारी की हैसियत से समिति संयोजिकाओं को पूरी मदद का वादा किया। प्रदेश सचिव ने अखिल भारतीय संगठन की तर्ज पर जीरो पेपर वर्क की कार्यप्रणाली को सदन में रखा। अंत में विदर्भ स्तरीय निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कारों की घोषणा की गई, जिसमें प्रथम सौ. स्नेहल अनूप काबरा चंद्रपुर, द्वितीय सौ. अर्चना लाहोटी अमरावती एवं तृतीय सौ. राखी चांडक अकोला को दिया गया। निबंध स्पर्धा की निर्णायक सौ. ज्योति भूतड़ा का स्मृति भेंट देकर मान्यवरों द्वारा सत्कार किया गया।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार सौ. भारती राठी ने सफलता पूर्वक किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी कार्यसमिति सदस्यों ने अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान किया।

प्यासे पंछियों के लिए 'नीर घट' वितरित : गर्मी में पंछियों के लिए कार्यसमिति में 'स्व. महेशचंद्र करवा की स्मृति' में नीर घट वितरित किये गये। इस अवसर पर संगठन अध्यक्षा श्रीमती उषा करवा ने ग्यारह जिलों से पधारी बहनों को अपने जिलों, हर तहसील, हर ग्राम में उस उपक्रम को विशाल स्वरुप प्रदान कर पक्षियों की सुरक्षा में अपना योगदान देने का आव्हान किया। उपस्थित सभी बहनों ने इस संकल्प को पूरा करने का आश्वासन दिया और प्रकृति की रक्षा की दिशा में अपना कर्तव्य निभाने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम का सफल संचालन एवं आभार विदर्भ सचिव भारती राठी ने किया।

बृ. कोलकाता प्रादेशिक माहे. महिला मंडल

बृहत्तर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन ने 17-18 दिसम्बर 2016 को स्थानीय स्प्रिंग क्लब में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला व सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारी अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन किया।

जिसमें एकादश सत्र के नवनिर्वाचित महिला पदाधिकारियों का समस्त राष्ट्रीय पूर्व अध्यक्षाओं एवं निर्वतमान सभा अध्यक्ष जोधराज जी लड्ढा का स्वागत किया गया। इस अवसर पर प्रदेश द्वारा महिला सशक्तिकरण पर आयोजित प्रणम्या नृत्य नाटिका का अभूतपूर्व सफल मंचन सोनाली मूँदड़ा के निर्देशन में हुआ। वृहत्तर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन ऐसे अनेक कार्य करती है, जिनसे समाज का चतुर्मुखी विकास हो तथा अंतिम छोर के व्यक्ति तक उस विकास का हिस्सा पहुँचे। 26 मार्च 2017 को कोलकाता प्रदेश द्वारा नव सम्वत् 2074 पर स्थानीय माहेश्वरी भवन से शोभायात्रा का आयोजन उत्कर्षा-2017, 700 समाजजनों की उपस्थिति में हुआ। समस्त अंचलों ने होली, गणगौर व नव सम्वत् पर मनमोहक झाँकियाँ निकाली। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, महिला सशक्तिकरण व अपने संस्कार अपनी संस्कृति पर समस्त अंचलों ने पोस्टर बनाये। पूरा कार्यक्रम शोभा सादानी, इंदिरा गांधी व मंजू कोठारी के निर्देशन में हुआ।

विकास कार्य के तहत प्रदेश ने 24 परगना स्थित पश्चिमचाक ग्राम में निर्मला मल्ल एवं कुसुम मूँदड़ा ने 5 ट्यूबवेल लगवाए, अनाथालय में रू. 15000/- तथा टेबिल कुर्सी का अनुदान, जरूरतमंद बच्चों को पठन-पाठन सामग्री वितरण किया। स्नेह नीर अनाथालय में 25 एच.आई.वी. पीड़ित बच्चियों में नए वस्त्र, खिलौने तथा नाश्ता निर्मला मल्ल द्वारा दिया गया। सामूहिक विवाह में 110 जोड़ों को वस्त्र वितरण किया गया। वृहत्तर कोलकाता माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत रिड़ा अंचल ने 350 व्यक्तियों का नि:शुल्क नेत्र परीक्षण, ऑपरेशन तथा चश्मा वितरण तथा कैंसर अवेयरनेस का चैकअप किया।

हिन्दमोटर अंचल द्वारा 150 युवतियों को सेल्फ डिफेंस की क्लास महिला दिवस पर वॉकथा जल बचाओ पर पोस्टर द्वारा जागृति एवं करीब 300 जरूरतमंदों का निशुल्क नेत्र परीक्षण, ऑपरेशन तथा चश्मा वितरण का प्रकल्प किया। कुकिंग, बेकिंग, किशोरी विकास शिविर, व्यान किया। क्लास, चित्रकला, रंगोली तथा टोटो ट्रेजर हंट प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। यह सभी कार्य हावड़ा वी.आई.पी. पूर्व कोलकाता, नवयुवती मध्य कोलकाता, दक्षिण कोलकाता अंचल के द्वारा हुआ।

आगामी योजनाओं के तहत जरूरतमंद युवती को बी.एड. की पढ़ाई हेतु अनुदान, हरीशपुर ग्राम जो गोद लिया हुआ है उसके विकास कार्य के साथ-साथ एक ग्राम गोद लेकर उसका सर्वांगीण विकास, शिक्षा व स्वावलंबन में सहयोग के साथ बहनों के लिये वोकेशनल ट्रेनिंग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, बैंकिंग तथा ई-मार्केटिंग प्रशिक्षण की योजना बनाई गई। किशोर-किशोरी समर कैंप पूर्वांचल द्वारा पूर्वा पूवैया 6 से 8 जुलाई में प्रदेश की भागीदारी 16 से 20 दिसम्बर विराट राष्ट्रीय औद्योगिक मेला, युवती खेल प्रतियोगिता, राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक प्रदेश के भावी कार्यक्रम आयोजन की योजना बनाई गई।

निर्मला मल्ल, अध्यक्ष
सीमा भट्टड़, मंत्री

कुछ बातें जो जीवन बदल देती हैं

- बड़ा व्यक्ति उसे कहा जाता है जो छोटे के साथ छोटा बन सके।
- खूबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते लेकिन अच्छे लोग हमेशा खूबसूरत होते हैं।
- जीवन में कभी किसी से अपनी तुलना मत करो, आप जैसे हैं, सर्वश्रेष्ठ हैं।
- सुख देना ही सुख लेना है।
- हंसमुख व्यक्ति वह फुहार है जिसके छींटे सबके मन को ठंडा करते हैं।
- शांति सब धर्मों का मूल तत्व है।
- विषम परिस्थितियों में शांत रहने वाला निश्चित ही शिखर को छूता है।
- कौन क्या कर रहा है, क्यों कर रहा है, इन सबसे आप जितना दूर रहेंगे, उतना खुश रहेंगे।
- जिसका मन शुद्ध नहीं, वह कभी भी महान नहीं बन सकता।
- अपने अंदर के अहंकार को निकाल स्वयं को हल्का करें क्योंकि ऊँचा वही उठता है जो हल्का होता है।
- लक्ष्य के बिना जीवन बिना पता लिखे लिफाफे की तरह है जो कहीं नहीं पहुंचता।
- कठिन समय में समझदार व्यक्ति रास्ता खोजता है और कायर बहाना।
- भगवान जिसे सच्चे मन से प्यार करते हैं, उसे अग्नि परीक्षाओं से गुजारते हैं।
- किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए तीन बातों का होना अनिवार्य है - इच्छा, विश्वास और मेहनत।
- इंसान अपने शरीर की शुगर तो चेक कराता है लेकिन जुबान की कड़वाहट नहीं।
- वाणी को वीणा बनायें, वाणी को बाण न बनायें।
- यदि आपको पहली बार में सफलता नहीं मिलती है तो फिर से कड़ी मेहनत करें।
- 'मैं श्रेष्ठ हूं' यह आत्मविश्वास है लेकिन 'मैं ही श्रेष्ठ हूं' यह अहंकार है।
- कुछ भी नया करने में संकोच मत करो, हार कभी होती नहीं, या तो जीत मिलती है या सीख मिलती है।
- सदा आत्म-अभिमानी रहने वाला ही सबसे बड़ा ज्ञानी है।
- खुद की उन्नति में इतना समय लगा दो कि किसी की निंदा करने का समय ही न बचे।
- अन्तर्ज्ञान के पवित्र सरोवर में जीवन का परम आनन्द निहित है।
- क्रोध और आंधी दोनों बराबर हैं, शांत होने के बाद ही पता चलता है कि कितना नुकसान हुआ।
- बुरे के साथ बुरा मत बनो क्योंकि कीचड़ से कीचड़ को साफ नहीं किया जा सकता।
- शुद्ध संकल्पों को अपने जीवन का अनमोल खजाना बना लो तो मालामाल बन जाओगे।
- इत्र से कपड़ों को महकाना बड़ी बात नहीं, मजा तो तब है जब खुशबू आपके किरदार से आये।
- ईश्वरीय सेवा में स्वयं को ऑफर करो तो आफरीन मिलती रहेगी
- बुरे वक्त में कुछ लोग टूट जाते हैं तो कुछ लोग रिकॉर्ड तोड़ देते हैं।

शुभकामनाओं सहित

हरीश डोडिया

मोबाइल : 9425916225

Bharat Petroleum

मेसर्स चारभुजा फ्युल्स

तराना, जिला उज्जैन

भारत पेट्रोलियम डीलर

शुभकामनाओं सहित

स्वाति काबरा

फायनेन्शियल प्लानर एण्ड एडवाइजर

Email : swatibipinkabra@gmail.com, Mobile : +91-9868122621

धसई में स्वास्थ्य शिविर

थाना जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा 25 मार्च 2017 को 'धसई' के प्राथमिक आरोग्य केन्द्र में सौष्ठा–स्वास्थ्य

एवं सुगंधा – ग्राम विकास समिति के अंतर्गत नि:शुल्क चिकित्सा शिविर रखा गया। अगर किसी को कोई गंभीर बीमारी जांच में निकल कर आई और वो पीला या ऑरेंज राशन कार्ड वाला है, तो उसका इलाज सेवेन हिल्स अस्पताल 'मरोल' अंधेरी में फ्री किया जायेगा।

राम रक्षा प्रतिष्ठान के द्वारा आसपास के गांव से करीबन 272 महिलाओं एवं पुरुषों का परीक्षण किया गया, साथ ही ई.सी.जी., एक्सरे मशीन भी प्राथमिक आरोग्य केन्द्र में स्थापित करवाये। ये व्यवस्था डॉ. आर.एम. मूंदड़ाजी एवं डॉ. उर्मिलाजी मूंदड़ा (अंबरनाथ) के विशेष सहयोग से संभव हुआ।

थाना जिला जल सेवा के अंतर्गत धसई के 'सावरे की बाड़ी' से चार किलोमीटर दूर नहर से पानी लाने के लिए 'जल पंप' की स्थापना जल आपूर्ति के लिए करवाये।

आमदार मा. श्री किसनरावजी कथोरे साहब सोलर एनर्जी के द्वारा बिजली की व्यवस्था करवायेंगे, इस माध्यम से वो हमेशा बिना बिजली शुल्क दिये जल सेवा का उपभोग कर सकेंगे।

इस अवसर पर कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जिलाध्यक्ष सौ. सुनीताजी पलोड़, उपाध्यक्ष सौ. दुर्गाजी मानधने एवं सुगंधा समिति प्रमुख सौ. माधुरीजी मानधने ने आये हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया।

सौ. अंजूजी भुराड़िया (जिला सचिव) ने सबका आभार प्रदर्शन किया।

गांव के लोगों में बंटवाने के लिए 'साड़ी बैंक' के माध्यम से पुरानी साड़ियां भी इकट्ठा कीं। इसके अलावा 'स्वच्छ भारत' अभियान के तहत गांव के लोगों को साफ–सफाई का महत्व समझाया। वहां 18 महिलाओं को सम्मानित किया। गांव के छोटे स्कूल जा रहे बच्चों को 'स्कूल यूनिफार्म' भी दिये।

माहेश्वरी महिला मण्डल, चित्तौड़गढ़

संगठन की अध्यक्ष श्रीमती सुनीता भण्डारी ने बताया कि माहेश्वरी महिला संगठन चित्तौड़गढ़ द्वारा 25 आंगनवाड़ी केन्द्रों पर वाटर केन रखवाई गई, जहां नल कनेक्शन नहीं

था और भीषण गर्मी में बच्चे पानी के लिए परेशान होते थे। यह कार्य जिलाधीश की अनुमति लेकर किया गया। इस अवसर पर संगठन की अन्य सदस्याएं उपस्थित थीं। सचिव वंदना भण्डारी ने सभी का आभार प्रकट किया।

माहेश्वरी महिला मण्डल, मैनपुरी

मध्य उत्तरप्रदेश महिला संगठन कानपुर की अध्यक्ष

श्रीमती सुजाता राठी के नेतत्व में मैनपुरी महिला मण्डल का गठन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीमती मंजूजी बांगड़ एवं नीताजी खटोड़, संगठन मंत्री उर्मिलाजी भट्टड आदि के नेतृत्व में चुनाव की प्रक्रिया सम्पन्न हुई। नव-गठित कार्यकारिणी में श्रीमती राजजी मूंदड़ा अध्यक्ष बनाई गईं, नव-निर्वाचित सचिव श्रीमती विनीताजी खटोड़ ने सभी को धन्यवाद प्रेषित किया।

माहेश्वरी महिला मण्डल सागर

माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती हेमा जेथलिया, सचिव ममता चांडक ने बताया कि चैत्र शुक्ल की तृतीया के दिन सागर नगर की माहेश्वरी समाज की महिलाओं ने राघव मंदिर में गणगौर पूजन व व्रत कर भाग लेकर अपने अखण्ड सुहाग की कामना की। दूसरे दिन शाम के समय ईसर गणगौर को पानी पिलाकर गोद भराई की गई व गणगौर माता को गाजे-बाजे के साथ तालाब तक जाकर विसर्जित किया। सभी महिलाओं ने बढ़चढ़ कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

बेमेतरा मा. महिला मण्डल ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया

बेमेतरा माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया, जिसमें डॉ. टावरी, डॉ. मयूर राठी, बेरला निवासी रोहितजी भट्टड़, नीतू कोठारी, स्मिता लखोटिया हमारे अतिथि थे। डॉ. टावरीजी ने अपने उद्बोधन में महिलाओं में आज की बड़ी समस्या ब्रेस्ट कैंसर, यूटरस कैंसर, सरवाइकल कैंसर बढ़ते जा रहे हैं, उसके कारण व बचाव कैसे किया जाए पर जानकारी दी। डॉ. मयूरजी राठी ने दांतों की सफाई पर विशेष ध्यान देने को कहा और समय-समय पर चेकअप करवाते रहने की सलाह दी।

बरेली से पधारे रोहितजी भट्टड़ जो अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कोषाध्यक्ष हैं, उन्होंने राजनीति पर चर्चा की और कहा महिलाओं की राजनीति पर भागीदारी होनी चाहिए। नीतू कोठारी (उपाध्यक्ष छात्र संघ) ने भी राजनीति पर चर्चा की और उन्होंने कहा कि महिलाओं को राजनीति में आना चाहिए।

हमारी पेंटिंग मास्टर स्मिताजी लखोटिया ने भारतीय स्तर पर पेंटिंग प्रतियोगिता, जिसका विषय था 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' पर ऑल इण्डिया में प्रथम स्थान प्राप्त की, उनका सम्मान प्रमाणपत्र देकर किया गया और उनके द्वारा वर्कशॉप लिया गया, जिसमें उन्होंने बताया कि पेंटिंग एक मेडिटेशन है, जिसमें आप कभी भी डिप्रेशन में नहीं आ सकते हैं और इससे एकाग्रता व संयम सीखते हैं, जो आज की पीढ़ी में नहीं है।

स्मिता चांडक द्वारा मंच संचालन किया गया। कार्यक्रम में हमारी मा. महिला संगठन की चंद्रकांता राठी, धापू डांगरा, सरस्वती मूंदड़ा, संध्या मूंदड़ा, छाया राठी, इन्दु राठी, भावना राठी, सपना राठी, मंजू राठी, रेणु राठी, श्यामा लखोटिया, ज्योति गिलड़ा, अनीता गिलड़ा, पुष्पा राठी, कृष्णा मोहता, छाया लखोटिया, संतोष राठी, खुशबू राठी, उषा चांडक, श्यामा राठी आदि उपस्थित थे।

माहेश्वरी महिला मण्डल हापुड़

माहेश्वरी महिला मण्डल हापुड़ द्वारा दिनांक 10.04.2017 को सुरम्या समिति के अन्तर्गत बहनें संसद भवन देखने गईं, राज्यसभा-लोकसभा दोनों सदनों को देखा। झारखण्ड के सांसद श्री महेशजी पोद्दार का इसमें विशेष सहयोग रहा, साथ ही सांसद श्री राजेन्द्रजी अग्रवाल का भी सहयोग

प्राप्त हुआ। जिलाध्यक्ष श्रीमती कान्ताजी माहेश्वरी ने कहा कि इससे सदस्यों का काफी ज्ञानवर्द्धन हुआ है। श्रीमती साधना लोया, श्रीमती सीमा तापड़िया, श्रीमती मधु खटोड़, श्रीमती आशा तापड़िया, श्रीमती आशा सोमानी, श्रीमती मंजू, श्रीमती अलका, श्रीमति शशि, श्रीमती रश्मि, श्रीमती कमल आदि का इसमें सहयोग प्राप्त हुआ।

सचिव श्रीमती आशा तापड़िया

माहेश्वरी महिला समिति पुरुलिया

श्रीमती जयंती सारडा ने बताया कि 1 मार्च को महिला दिवस के उपलक्ष्य में शक्ति संघ अस्पताल में 15 महिला कर्मचारियों को सहयोग प्रदान किया गया, साथ ही

10 मार्च को महिला दिवस मनाया गया, जिसमें 17 महिलाओं ने भाग लिया। श्रीमती अर्चना मोहता, श्रीमती जयश्री सारडा के नेतृत्व में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

23 मार्च को गणगौर उत्सव मनाया गया, जिसमें ईसर गणगौर के विवाह की नृत्य नाटिका की भी महिलाओं एवं बालिकाओं द्वारा बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति दी गई। श्रीमती मैना मोहता के नेतृत्व में कार्यक्रम बहुत ही सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

माहेश्वरी महिला गौरव उदयपुर

माहेश्वरी महिला गौरव की संरक्षिका श्रीमती कौशल्या गट्टानी ने बताया कि संस्था द्वारा होली उत्सव मिलन बड़ी धूमधाम से मनाया गया, जिसमें सभी ने पानी बचाने का संकल्प लिया व तिलक लगाकर होली खेली।

25 मार्च को चिकित्सा परामर्श शिविर लगाया गया, जिसमें अनुभवी चिकित्सकों द्वारा स्वस्थ जीवन जीने की कलाएं बताई गईं। करीबन 1000 महिलाओं ने इसमें भाग लिया।

28 मार्च को राजस्थान दिवस पर करीबन 1000 महिलाओं ने मिलकर स्वस्थ भारत स्वास्थ्य अभियान के अन्तर्गत स्कूटी रैली निकाली।

माहेश्वरी महिला मण्डल मेरठ में दिनांक 31 मार्च के दिन गणगौर के सामूहिक उद्यापन का आयोजन दिल्ली रोड सुपरटेक पाम ग्रीन्स के कम्युनिटी सेन्टर में किया। अध्यक्षा मधु डांगरा व सचिव प्रगति माहेश्वरी ने सभी महिलाओं का कलावा बांधकर स्वागत किया। संचालन वंदना माहेश्वरी ने किया। कार्यक्रम में त्योहारों से संबंधित गेम साक्षी वंदना व ऋतु केला ने खेलाये। सभी ने एकसाथ बैठकर पूजा की व कहानी सुनी। मंत्रिमंडल के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र भट्टरजी व सचिव नरेश माहेश्वरीजी का सहयोग मिला। अंत में सभी ने खाना लेकर अपने व्रत को पूरा किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला मंडल की मधु, प्रगति, वंदना, साक्षी, सुनीता, लता, आशा, राज, कविता, मोना, आशी, रीमा, रेखा, उषा, जनक, रेनू, सुनीला, मीनाक्षी, सुषमा, शैली, कोमल, सोनिया, रति, एकता, अंकित, ऋतु, अंजू, रानू, अन्नू, रचना, अलका, सरिता, गीतांजली, कृष्णा, दीपाली, मीना, गुंजन आदि का सहयोग रहा।

माहेश्वरी महिला मण्डल, कानपुर

श्री माहेश्वरी महिला मण्डल के तत्वावधान में 'रुनक झुनक गणगौर' कार्यक्रम दिनांक 28/03/2017 को 'राजस्थान भवन', करांचीखाना, कानपुर में आयोजित किया गया। इसमें बहनों ने गणगौर के गीत गाकर सभी को झुमाया और रिझाया। तत्पश्चात् ईशर-गौरा गीत गायन प्रतियोगिता एवं गणगौर सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ईशर गौरा गीतों एवं गणगौर की दर्शनीय सजावट ने सभी सदस्यों का मन मोह लिया। आरम्भ में पधारी हुई सभी बहनों का मेहंदी एवं ठंडाई से स्वागत किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रुप से राष्ट्रीय संगठन मंत्री मंजू बांगड़ उपस्थित थीं। अध्यक्षा श्रीमती अंजू जाजू ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्राणी श्रीमती करुणा अटल ने किया। इस आयोजन में श्रीमती शालिनी करनानी, सीमा झंवर, नीलम मंत्री, सुमन डागा, शालिनी तोषनीवाल, आरती, रिचा, कविता, तुषिता आदि का प्रमुख योगदान रहा।

अन्त में सभी सदस्याओं ने तरह-तरह की चाट एवं कुल्फी का रसास्वादन लिया।

शहर की नामचीन महिलाओं का सम्मान

कानपुर मदर-डे के अवसर पर सोमवार को शहर की नामचीन महिलाओं का सम्मान किया गया। इनरव्हील क्लब ऑफ कानपुर ईस्ट एवं जी लाइन एकेडमी द्वारा आयोजित मातृ शक्ति नमन कार्यक्रम में 6 महिलाओं को स्वयंसिद्धा सम्मान दिया गया। स्वरूप नगर के हेरिटेज होम में आयोजित कार्यक्रम में स्वास्थ्य सेवाओं में डॉ. किरण पाण्डे, व्यक्तित्व विकास में मंजू बांगड़, युवा गतिविधियों में सुगंधा परमार, कम्प्यूटर शिक्षा में स्तुति, आर्थिक उन्नयन में पद्मा शुक्ला, मानवाधिकार में नीलम चतुर्वेदी, उद्यमिता विकास में उदिता शर्मा को सम्मानित किया गया। पुरस्कार क्लब की वरिष्ठ सदस्या पीडीपी डॉ. नवीन मोहिनी निगम द्वारा अपनी सास की स्मृति में शुरू किया गया है। फैशन शो व

रंगारंग कार्यक्रम भी आकर्षक रहे। अध्यक्षा मनीषा बाजपेयी जी, लायन एकेडमी डायरेक्टर केरोकिम जीशान मौजूद थे।

श्रीमती करुणा अटल, मंत्राणी

माहेश्वरी महिला मण्डल बीकानेर

माहेश्वरी महिला समिति बीकानेर द्वारा आयोजित 'गणगौर महोत्सव-2017' सांस्कृतिक झलकियों के साथ

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि समाजसेवी श्रीमती सुशीला देवी झंवर तथा अध्यक्षा श्रीमती लता मूंदड़ा के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। समिति अध्यक्षा श्रीमती अंजली झंवर ने बताया कि इस अवसर पर वन मिनट गेम शो व अनेक प्रतियोगिताएं युवा साथी योगेश बाहेती व सुश्री दीक्षा बिन्नानी ने करवाई। महिला समिति अध्यक्षा अंजली झंवर ने स्वागत उद्बोधन में सभी आगन्तुकों का स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन पवन राठी (मंत्री) बीकानेर जिला माहेश्वरी युवा संगठन व शिल्पा मोहता ने संयुक्त रुप से किया। इस अवसर पर समिति सदस्या परिचय डायरी का विमोचन व माहेश्वरी समाज की प्रमुख संस्कार चैनल गायिका विजय लक्ष्मी डागा का सम्मान भी महिला समिति, बीकानेर द्वारा किया गया। इस अवसर पर उपस्थित समस्त मीडिया का भी सम्मान किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम संगीत संयोजिका दुर्गा मूंदड़ा व अंजू लोहिया के निर्देशन में प्रस्तुत किया गया, जिसमें संतोष राठी, निशा झंवर का पूर्ण सहयोग सराहनीय रहा।

महिला समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम में समाज के अन्य सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता पवन राठी द्वारा महिला समिति, बीकानेर की पूर्व अध्यक्षा व वर्तमान परामर्श मंत्राणी रेखा लोहिया को उनके 6 वर्षीय अध्यक्षता के कार्यकाल के संक्षिप्त विवरण की फाइल (प्रतिवेदन) व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जहां एक ओर उद्योग मेला, खाने-पीने की स्टॉल्स समिति सदस्या द्वारा उपलब्ध करवाई गई वहीं बच्चों के लिए गेम-जोन की व्यवस्था भी की गई।

समिति की उपमंत्राणी विभा बिहाणी ने बताया कि आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सास-बहू प्रतियोगिता में रेखा लोहिया, प्रियंका, कंचन राठी, मीना लखोटिया, अंजू बागड़ी, रितु बागड़ी ने प्रथम 3 स्थान प्राप्त किया वहीं अन्य प्रतियोगिता जैसे-

डांस प्रतियोगिता में - रुचिका बागड़ी, रुचिका कोठारी, छवि लोहिया कोलाज प्रतियोगिता में-कशिश दरगड़, छवि लोहिया, कृष्णा मूंदड़ा

क्विज जूनियर में-मृदुल दम्माणी, आदित्य दम्माणी, मयंक मोहता, सौम्या डागा, यश कोठारी, कृष्णा मल्ल।

क्विज सीनियर में-कशिष चांडक, धनंजय बिहाणी, आयुष दम्माणी तथा महक राठी।

वन मिनट गेम-शो में-

मार्बल कंचे-धर्मिष्ठा बिहाणी, लक्षिता बिहाणी।

शर्ट/बैलून प्रतियोगिता- विभा बिहाणी, ममता चांडक आदि ने अपना-अपना स्थान बनाया।

गणगौर महोत्सव-2017 के सम्पूर्ण कार्यक्रम में जहां एक ओर बीकानेर माहेश्वरी समाज की प्रमुख संस्थाओं के मुख्य पदाधिकारी उपस्थित थे वहीं दूसरी ओर अन्य कई

गणमान्य व्यक्ति सोहनलाल गट्टाणी, मगनलाल चांडक, अरुण झंवर, मदन गोपाल झंवर, नारायण दास दम्माणी, जगदीश कोठारी, नारायण दास बिहाणी, मनमोहन लोहिया आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अन्त में समिति संरक्षिका किरण झंवर ने आगन्तुकों का आभार व्यक्त करते हुए भवन हेतु जुगल डागा, टेन्ट हेतु मनीष दम्माणी व जलधारा के श्याम राठी का विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया तथा सम्पूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग करने वाले सभी साथियों का समिति द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया।

वाराणसी में 'चेतना लहर समिति द्वारा' टॉक–शो परिचर्चा

अ.भा.म. महासभा की चेतना लहर समिति की संयोजिका

श्रीमती विमला देवी साबू व उत्तरप्रदेश के प्रभारी श्री लोकेन्द्रजी करवा के सम्मिलित प्रयास से बनारस में टॉक–शो का कार्यक्रम उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में करीब 250 लोग समाज के उपस्थित रहे।

मुख्य विषय रहे: दाम्पत्य जीवन के बिखरते हुए रिश्ते, परिवार में संवादहीनता, विवाह–शादी समय पर न होना।

उपस्थित भाई–बहनों ने वार्तालाप द्वारा अपने विचारों व भावनाओं को प्रकट किया। समाज के मुख्य महानुभाव श्री गोवर्धनजी झंवर, विरेन्द्रजी भुराड़िया, राम दुजारीजी, गौरीशंकरजी नेवर, नंदकिशोरजी झंवर, प्रदेश अध्यक्ष शशिजी नेवर सभी लोग पूरे कार्यक्रम में रहे व विचार प्रकट किये। श्री लोकेन्द्रजी करवा व उनकी टीम के प्रयासों से कार्यक्रम पूरा सफल रहा। श्रीमती विमला देवी साबू ने कुशलता पूर्वक अपने प्रखर विचारों एवं वार्तालाप द्वारा सभी को बांधे रखा।

अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा की चेतना लहर समिति की संयोजिका श्रीमती बिमला देवी साबू व उत्तर प्रदेश के प्रभारी श्री लोकेंद्र जी करवा के सम्मिलित प्रयास से बनारस में टॉक शो का कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में करीब 250 लोग समाज के उपस्थित रहे। **मुख्य विषय रहे :** दाम्पत्य जीवन के बिखरते हुए रिश्ते, परिवार में संवादहीनता, विवाह–शादी समय पे न होना! उपस्थित भाई–बहनो में वार्तालाप द्वारा अपने विचारों व भावनाओं को प्रकट किया, समाज के मुख्य महानुभाव श्री गोवर्धन जी झंवर, विरेंद्र जी भुराड़िया, राम दुजारी जी, गौरी शंकर जी नेवर, नंदकिशोर जी झंवर, प्रदेश अध्यक्ष शशि जी नेवर, सभी लोग पूरे कार्यक्रम में रहे व विचार प्रकट कियें श्री लोकेंद्र जी करवा व उनकी टीम के प्रयासों से कार्यक्रम पूरा सफल रहा। श्रीमती बिमला देवी साबू ने कुशलता पूर्वक अपने प्रखर विचारों एवं वार्तालाप द्वारा सभी को बाँधे रखा।

माहेश्वरी महिला मंडल मेरठ

माहेश्वरी महिला मंडल मेरठ ने दिनांक 30 मार्च के दिन गणगौर के सामूहिक उद्यापन का आयोजन दिल्ली रोड सुपरटेक पाम ग्रीन्स के कम्युनिटी सेंटर में किया। अध्यक्षा

मधु डांगरा व् सचिव प्रगति माहेश्वरी ने सभी महिलाओं का कलावा बाँध कर स्वागत किया। संचालन वंदना माहेश्वरी ने किया।

कार्यक्रम में त्योहारों से सम्बंधित गेम साक्षी वंदना व ऋतु केला ने खिलाये। सभी ने एक साथ बैठ कर पूजा की व कहानी सुनी। मंत्रीमंडल के अध्यक्ष श्री देवेंद्र भट्टर जी, व सचिव नरेश माहेश्वरी जी का सहयोग मिला। अंत में सभी ने खाना ले कर अपने व्रत को पूरा किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला मंडल की मधु, प्रगति, वंदना, साक्षी, सुनीता, लता, आशा, राज, कविता, मोना, आशी, रीमा, रेखा, ऊषा, जनक, रेनू, सुनीला, मिनाक्षी, सुषमा, शैली, कोमल, सोनिया, रति, एकता, अंकित, ऋतु, अंजू, रानू, अन्नू, रचना, अलका, सरिता, गीतांजलि, कृष्णा, दीपाली, मीना, गुंजन आदि का सहयोग रहा।

ग्वालियर माहेश्वरी महिला ने मनाया 52वां वार्षिकोत्सव

बृहत्तर ग्वालियर माहेश्वरी महिला मण्डल ने अपना 52वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर महिला मण्डल द्वारा अपनी सभी पूर्वाध्यक्षों का सम्मान किया गया। संस्था की

संस्थापक सचिव एवं अखिल भारतवर्षीय महिला मण्डल की पूर्व अध्यक्ष ''श्रीमती मनोरमा लड्ढा'' को ''लाइफ टाईम अचीवमेन्ट अवार्ड'' से सम्मानित किया गया। श्रीमती मनोरमा जी को यह अवार्ड समाज ने उनके अभूतपूर्व व अद्वितीय योगदान के लिए दिया गया। गौरतलब है कि श्रीमती मनोरमा जी ने ही 52 वर्ष पहले सचिव की भूमिका को वहन करते हुए इस संस्था को बनाया था।

इसी के साथ सतरंगी संध्या नाम से सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत भारतीय संस्कृति के विभिन्न त्योहारों को नृत्य, संगीत व झांकी के सुंदर माध्यम से दिखाया गया। समारोह में होली, दिवाली, संक्रांति, तीज, गणगौर, नवरात्रि व जन्माष्टमी जैसे त्योहारों का सुंदर चित्रण हुआ, जिसे सभी उपस्थित अतिथियों ने काफी सराहा। साथ ही साथ महेश वंदना को भी नृत्य द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में ग्वालियर की पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा जी गुप्ता मौजूद रहीं। संस्था अध्यक्षा श्रीमती प्रियदर्शनी नागोरी, सचिव श्रीमती शिल्पी माहेश्वरी, कोषाध्यक्ष श्रीमती रोमा सारडा, संयोजिका श्रीमती सुनीता नागोरी, श्रीमती शीतल माहेश्वरी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में श्रीमती मनोरमा जी लड्ढा, श्रीमती विद्या देवी छापरवाल, श्रीमती मगनवती जी माहेश्वरी, श्रीमती मंजू जी साबू, श्रीमती मीना जी मूंदड़ा, श्रीमती शांता जी सिंगी, श्रीमती पुष्पा नागोरी, श्रीमती मंजरी जी छापरवाल, श्रीमती कंचन जी बिड़ला, श्रीमती रंजना जी थिरानी, श्रीमती वीणा जी राठी, श्रीमती सरिता जी साबू, श्रीमती अंजली जी साबू, श्रीमती किरण जी परवाल, श्रीमती डॉ. प्रियदर्शनी जी नागोरी का सम्मान किया गया।

जीवन का रहस्य

पानी ने दूध से मित्रता की और उसमें समा गया... जब दूध ने पानी का समर्पण देख तो उसने कहा-मित्र तुमने अपने स्वरुप का त्याग कर मेरे स्वरुप को धारण किया है...

अब मैं भी मित्रता निभाऊंगा और तुम्हें अपने मोल बिकवाऊंगा। दूध बिकने के बाद जब उसे उबाला जाता है तब पानी कहता है... अब मेरी बारी है मैं मित्रता निभाऊंगा और तुमसे पहले मैं चला जाऊंगा... दूध से पहले पानी उड़ता जाता है।

जब दूध मित्र को अलग होते देखता है तो उफन कर गिरता है और आग को बुझाने लगता है, जब पानी की बूंदें उस पर छींट कर उसे अपने मित्र से मिलाया जाता है तब वह फिर शांत हो जाता है। पर इस अगाध प्रेम में... थोड़ी सी खटास- (नींबू की दो चार बूंद) डाल दी जाए तो दूध और पानी अलग हो जाते हैं... थोड़ी सी मन की खटास अटूट प्रेम को भी मिटा सकती है।

रिश्ते में खटास मत आने दो। क्या फर्क पड़ता है, हमारे पास कितने लाख, कितने करोड़, कितने घर, कितनी गाड़ियां हैं, खाना तो बस दो ही रोटी है। जीना तो बस एक ही जिन्दगी है। फर्क इस बात से पड़ता है, कितने पल हमने खुशी से बिताये, कितने लोग हमारी वजह से खुशी से जीए।

बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ

दिल्ली नगर निगम में समाज की नवनिर्वाचित पार्षदों का हार्दिक अभिनंदन

श्रीमती कंचन माहेश्वरी

श्रीमती रीना माहेश्वरी

श्रीमती रेणु जाजु

अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन एवं राष्ट्रीय माहेश्वरी महिला समिति परिवार

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की समस्त बहनों को महेश नवमी की हार्दिक शुभकामनाएँ

श्रीमती आशा लड्ढा, फरीदाबाद

अध्यक्ष, राष्ट्रीय माहेश्वरी महिला समिति

श्री लालचंद जी बेली, शाहपुरा

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ट कार्यकर्ता भीलवाड़ा जिले के जिला संचालक, वरिष्ट नागरिक मंच राजस्थान के महामंत्री, वन्दे मातरम् फाउण्डेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं इतिहास लेखन समिति चित्तौड़ प्रानत के पूर्व मंत्री श्री लालचन्द जी बेली का अल्प बीमारी के बाद गत 26 अप्रैल को देहावसान हो गया। आप ज्ञवण, सुनील व नरेन्द्र के पिताजी एवं देवेन्द्र, यशवन्त बेली तथा राष्ट्रीय पूर्वाध्यक्ष श्रीमती गीता मून्दड़ा इन्दौर के बड़े भाई थे। आप अपने पीछे भरा–पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

आप हँसमुख, मिलनसार तथा आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे। आपातकाल में मीसाबन्दी के तहत 9 माह तक जेल में रहे। आपकी सक्रियता अन्तिम समय तक बनी रही।

नेत्रदानी श्रीमती सुषमा मंत्री, होशंगाबाद

डॉ. सुनील मंत्री की धर्मपत्नी, स्व. श्री बेंकटलालजी मंत्री की पुत्रवधू एवं श्री दीपक मंत्री सी.ए. की भाभी सौ. सुषमा मंत्री का असामयिक निधन हो गया है, परिवार में उनकी क्षति अपूरणीय है। आप एक सेवाभावी, मिलनसार, हंसमुख, व्यावहारिक व उद्यमी महिला थीं। आपने स्वयं के परिश्रम व लगन से अपना 'पहनावा' बुटिक छोटे से स्तर से प्रारम्भ कर उच्च शिखर तक पहुंचाया था। आपके नेत्रदान से दो सदस्यों को रोशनी प्राप्त हुई।

अ.भा.माहे. महिला संगठन की नि. अध्यक्ष श्रीमती सुशीला काबरा की आप भतीजा बहू तथा पू. मध्य मध्यप्रदेश महिला संगठन की सचिव सौ. अनिता जांवधिया की आप बहन थीं। राष्ट्रीय व प्रादेशिक महिला संगठनल की ओर से आपको भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।